जैन तीर्थवंदना

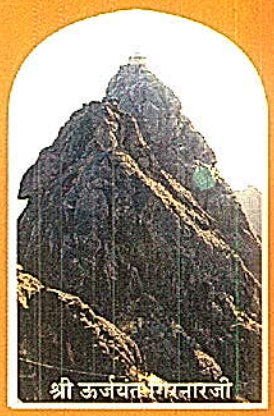

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2544

VOLUME : 9 ISSUE : 2 MUMBAI, AUGUST 2018 PAGES : 40 PRICE : ₹25

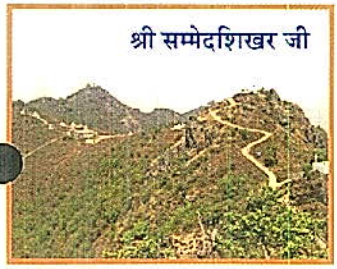

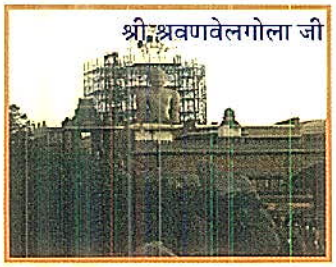

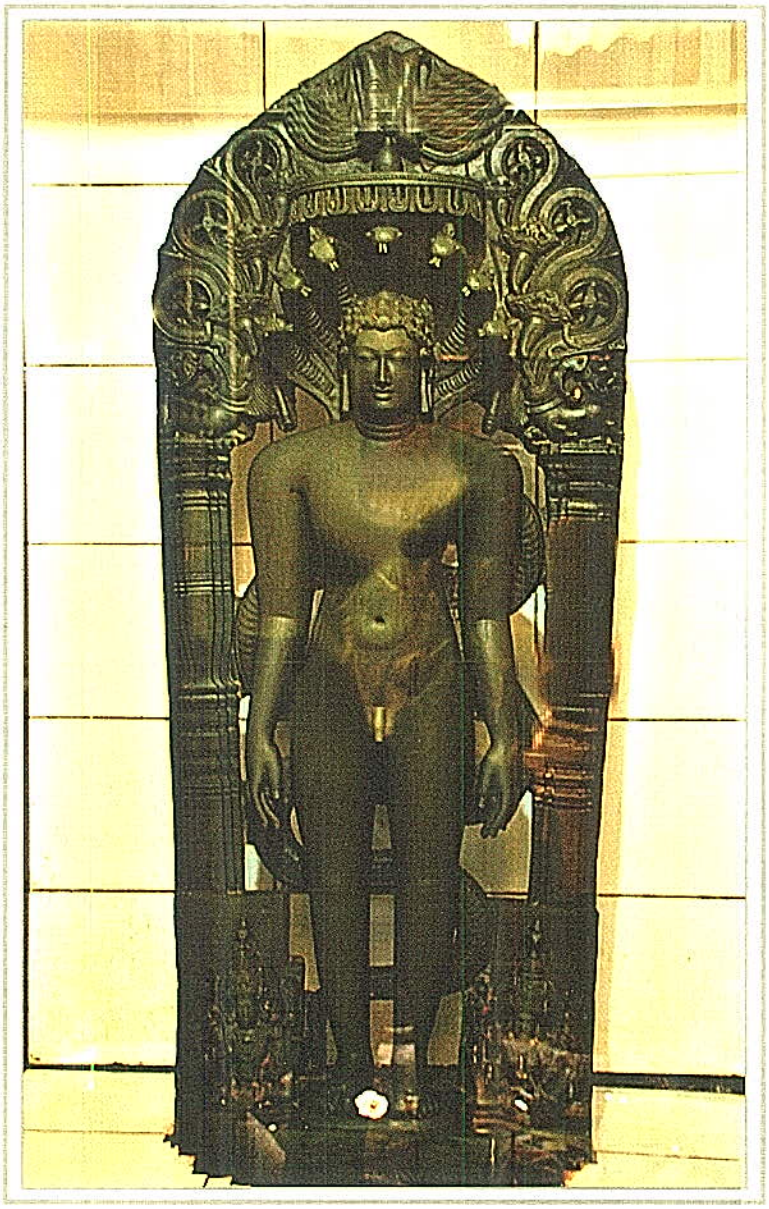

तीर्थंकर श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान
कसमलगी, कर्नाटक

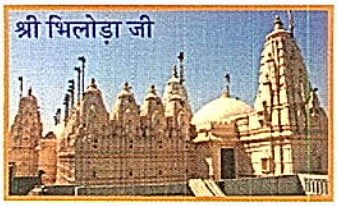

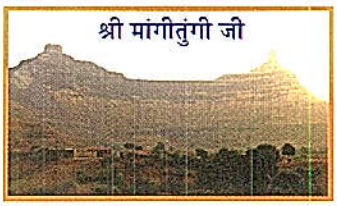

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

आभार के लिए मेरे पास शब्द नहीं, कैसे मानूं आभार मेरे अपनों का ?

मैंने कहीं पढ़ा है कि हमेशा तुरंत कहा गया 'धन्यवाद' एक सप्ताह बाद भेजे गए दो पृष्ठ के कृतज्ञता-पत्र से कहीं अधिक प्रभावी होता है। मेरा धन्यवाद कहने का वक्त आ गया है। आप सभी के सहयोग से मैंने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का अपना कार्यकाल पूर्ण किया है। सम्पूर्ण देशभर के सहयोग, पूज्य गुरुओं के आशीर्वाद से देश की सबसे बड़ी संस्था का गौरवशाली अध्यक्ष बनने का सौभाग्य मुझे 25 फरवरी 2016 को प्राप्त हुआ था। मैं 25 अगस्त 2018 को अपना कार्यकाल पूर्ण कर रही हूँ। मेरी इस गौरवशाली यात्रा में मेरे सहयोगी रहे उपाध्यक्ष श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी. आगरा, श्री वसंतलाल एम.दोशी, श्री नीलम अजमेरा, श्री पंकज जैन, श्री हुकुम जैन काका, महामंत्री श्री संतोष पेंढ़ारी, कोषाध्यक्ष श्री शिखरचंद पहाड़िया, मंत्री श्री विनोद बाकलीवाल, श्री वीरेश सेठ, श्री शरद जैन, श्री खुशाल जैन सी.ए. सहित अनेक सहयोगी रहे, जिन्होंने एक 'टीम स्पिरिट' और 'मिशनरी भावना' से एकजुट होकर कार्य किया और भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की प्रथम महिला अध्यक्ष का कार्यकाल निर्विघ्न रूप से सम्पन्न कराया।

मुझे गौरव होता है अपनी समाज पर, अपने परिवार के संस्कारों पर व मेरे परिवार के लगातार सहयोग पर। मुझे सौभाग्य मिला दिगम्बर संत, आर्यिका माताजी, अनेक त्यागियों के आशीर्वाद को प्राप्त करने साथ ही उनकी तप-त्याग-तपस्या की ऊर्जा को प्राप्त करने का जिससे हम सफलता के आयाम लिख सकें। हमने कोशिश की है कि तीर्थक्षेत्र जो दूरस्थ अंचल, जंगलों, दुर्गम स्थानों पर है जहाँ सहयोग नहीं पहुँच पाता है वहाँ सहयोग करें साथ ही उन तीर्थों की प्रसिद्धि हो, समाजजन वहाँ पहुँचे, कुछ अंशों में हम सफल हुए हैं, अभी भी कार्य करने की सम्भावनाएँ बनी हुई है।

हम सबने मिलकर सम्मेदशिखर सहित अन्य तीर्थों के प्रकरण जो न्यायालयों में लंबित थे, उन्हें शीघ्र सुनवाई में ले जाया जाए, अच्छे वकील किये जाएं, सफलता मिले, हम अपने तर्क रख सकें, इस कार्य हेतु सभी ने एक स्वर में हमें सहयोग दिया जो स्तुत्य है। हमारी समाज की यह बहुत बड़ी विशेषता है कि हम अपने आपसी मतभेदों को मनभेद नहीं बनने देते हैं। जिससे हमें सफलता मिल जाती है। जब-जब मौके आए सभी एक साथ खड़े नजर आए। मैं यह बताना चाहती हूँ किसी भी संस्था के लिए सद्भावना-समन्वय व सकारात्मक सोच ही प्रगति की ओर ले जा सकती है। मैंने उसी भावना अनुरूप अध्यक्षीय कार्यकाल में भी समन्वय की राह चुनी और आपसी सद्भावना के माध्यम से हम आगे बढ़े हैं। जो एक सुखद स्थिति है इस कार्य हेतु मैं मेरी टीम को बधाई और शुभकामनाएँ देते हुए आभार व्यक्त करती हूँ। वैसे बार-बार मन में विचार आता है कि अपनों का आभार कैसा? लेकिन यह भी एक प्रक्रिया है। अपनों ने ही मुझे यहाँ तक पहुँचाया, आज अपनों से अलग नहीं अपनों के साथ का आभार है कि ये बात यूं ही बनी रहे । हम सबके मन्तव्य एक है, सबका लक्ष्य तीर्थों का विकास है, समाज को आगे बढ़ाने की भावना है। आज हम सबको सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने की आवश्यकता है। तीर्थक्षेत्र कमेटी के

इस महापरिवार में अनेक जन सम्मिलित हुए उनमें हमारे मुम्बई कार्यालय के श्री उमानाथ दुबेजी का उल्लेख न करूं तो यह आभार अधूरा रहेगा, उन्होंने व उनके सहयोगियों ने मेरी बात को गम्भीरता से सुना और कार्यों को अंजाम तक पहुँचाने में बहुत मदद की। मेरा अनुभव रहा है कि हमें तीर्थों को निर्विवाद रखना चाहिये। समय-समय पर चुनाव हो, वहाँ का रिकार्ड व्यवस्थित हो, नये युवा उत्साही कार्यकर्ताओं को कमेटियों में जगह मिले, पदों पर आजीवन जमे रहने की प्रवृत्ति न हो। पारदर्शिता हो तो हमारे तीर्थ निरंतर प्रगति पथ पर आरूढ़ होते रहेंगे। जहाँ जो परम्परा चल रही है उसी परम्परा का सम्मान करते हुए विकास हो। परम्परा बदलने का प्रयास न हो। परम्परा के साथ विकास हो, जीर्णोद्धार हो, प्राचीनता को कायम रखते हुए हम अपनी विरासत का संरक्षण करें और आगामी पीढ़ी को एक समृद्ध विरासत सौंपें।

मेरा मानना है कि तीर्थों के विकास में 'अर्थ' से ज्यादा आवश्यकता 'आत्मीयता' की है, हम अपने बच्चों को तीर्थों की यात्राओं पर ले जाएँ, दूरस्थ तीर्थों पर जाएँ, वहाँ रुकें, वहाँ की ऊर्जा महसूस करें, बच्चों के हाथों में कलश देकर अभिषेक करायें, अभिषेक-पूजन कर वहाँ की ऊर्जा को आत्मसात करें आपको आनंद आएगा। मेरा हमारे संतों से आग्रह है कि वे प्राचीन तीर्थों को अपना सान्निध्य प्रदान करें, संत और समाज मिलकर तीर्थों के विकास में अहम भूमिका निभाते हैं। हमने देखा है कि जहाँ-जहाँ हमारे दिगम्बर संतों की कृपा हुई वे तीर्थ आज सर्वसुलभ हो गए हैं। हमारे तीर्थों को जीवन्त तीर्थ दिगम्बर गुरूओं का साथ भी आवश्यक है।

हम सबने 2018 में जैन जगत के सबसे बड़े अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी का महामस्तकाभिषेक किया। परमपूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी ने महोत्सव की राष्ट्रीय अध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पद पर मेरा मनोनयन कर एक बहुत बड़ा सौभाग्य दिया। महामस्तकाभिषेक में महामहिम राष्ट्रपतिजी, प्रधानमंत्रीजी, राज्यपालजी, मुख्यमंत्रीजी सहित देश के सभी राजनेता भगवान बाहुबली के दरबार में आए और सबने गोम्मटेश्वर को नमन कर दिगम्बरत्व को भारतीय संस्कृति का गौरव बताया। यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। वहीं इस बार सारे रिकार्ड टूट गये। आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज के सान्निध्य में पूज्य स्वामीजी के निमंत्रण पर 380 से अधिक पिच्छीधारी संत पधारे जो आजतक की सर्वाधिक उपस्थिति है। महामस्तकाभिषेक का समापन भी 31 अगस्त 2018 को हो रहा है। अगस्त माह में मेरी दोनों जिम्मेदारियों का टर्न पूरा हो रहा है, लेकिन मैं हमेशा से समाज का कार्य करती रही हूँ व करती रहूँगी। मैं सबको विश्वास दिलाती हूँ कि सम्पूर्ण कार्यों में मैं हमेशा सबके साथ हूँ। पद तो व्यवस्था है, हम सब एक हैं, साथ हैं तो सारे पद शोभायमान हैं। आप सभी की आत्मीयता के लिए मेरे पास शब्द नहीं है।

एक प्यासे को बादल का साधन चाहिये,
बादलों को भी नीला गगन चाहिये,
चाहे मन में खिले या वन में खिले,
मुझे सदैव संतों का आशीष और सबका साथ चाहिये।

सभी के प्रति हुई गलतियों व मनोमालिन्य के प्रति क्षमाभाव सहित-

पुनः आभार .....धन्यवाद

- सरिता एम.के.जैन

Sarita Jain

राष्ट्रीय अध्यक्ष

जिन्हें आत्म विश्वास उन्हें फिर चिन्ता क्या साधन की

डॉ. अनुपम जैन

जैन तीर्थ वंदना के गत अंक पर हमें अनेक अच्छी प्रतिक्रियाएं मिली। विशेषतः मध्यांचल के लोगों ने हमारी सद्भावना का आदर करते हुए यह कहा कि हम रद्दी संकलन की इस योजना में कूलर प्रदाय मध्याचंल के सभी तीर्थों तक विस्तारित कर देंगे। इस सहमति हेतु भाई श्री विमल जी सोगानी, श्री अशोक जी जैन एवं श्री जैनेश जी झांझरी आदि सभी सदस्यों व उनकी टीम को बहुत–बहुत साधुवाद।

ठंडे पानी के साथ–साथ ठंड के दिनों में गर्म पानी की सभी तीर्थों पर जरूरत होती है। आप किसी भी तीर्थ पर जाकर देखें, वहॉ लगे बॉयलरों अथवा गर्म पानी के कढ़ावों पर प्रातःकाल लगी कतारें और ठिठुरते हुए तीर्थ यात्रियों को देखकर कौन इसकी उपयोगिता को नकार सकता है? क्या ही अच्छा हो कोई राष्ट्रीय संस्था अथवा कोई बड़ा ग्रुप जो सामाजिक कार्य करने की घोषणा करते हैं वे इस व्यवस्था का जिम्मा ले और एक–एक अंचल में आवश्यकता की पूर्ति करते चले तो बहुत बड़ा काम हो जायेगा। मुझे याद है कि आज से 20 से 30 साल पहले लाला शिखरचंद जी जैन,रानीमिलवाले(मेरठ) जहां भी जाते थे वहां क्षेत्र की आवश्यकता के अनुरूप छोटी –बड़ी पानी की टंकी जरूर बनवा देते थें। एक नहीं अनेक क्षेत्रों पर आज रानीमिलवालों द्वारा बनवाई टंकियाँ आज भी देखने को मिलती हैं। बूंद–बूंद से घड़ा भरता है अतः यदि हम अपने क्षेत्रों पर सुविधाओं की कमी का रोना ही रोते रहेंगे तो कुछ नहीं होने वाला। तीर्थ क्षेत्र कमेटी की सम्मानित राष्ट्रीय अध्यक्षा परम आदरणीय **श्रीमती सरिता जी जैन (चेन्नई)** अनेक बार यह आव्हान कर चुकी हैं कि हम व्यवस्था की कमी नहीं बताये बल्कि उनमें सहभागी हो। उनकी सोच बड़ी ही सामयिक एवं स्पष्ट है। मैं क्षेत्र के प्रबंधकों से भी कहूंगा कि वे एक बार अपने क्षेत्र का समन्वित, योजनाबद्ध विकास का निश्चय कर लें तो साधन तो जुड़ते ही जायेंगे। एक चक्रव्यूह है जिसे क्षेत्र पदाधिकारियों को तोड़ना होगा।

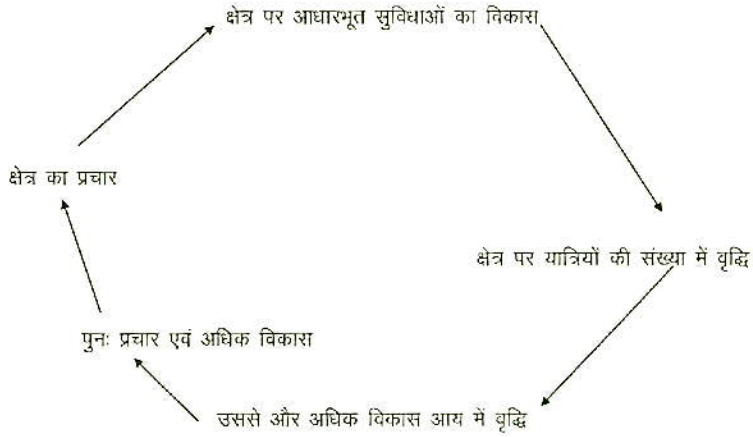

और हम यदि सोचते रहे पहले यात्रियों की संख्या में वृद्धि एवं आय में वृद्धि हो तो हमे कभी सफलता नहीं मिलेगी। मित्रों! मेरा यह विश्वास है **जिन्हें आत्मविश्वास, उन्हें फिर चिंता क्या साधन की।**

वर्तमान में सैकड़ों स्थानों पर परम वंदनीय आचार्य, उपाध्याय, मुनि,आर्यिका आदि का चौमासा हो रहा हैं। मैं सभी गुरुओं के चरणों में यह विनम्र निवेदन कर रहा हूं कि देवशास्त्र और गुरु हमारी शान है अतः वे देवालयों विशेषतः तीर्थों पर स्थित देवालयों के जीर्णोद्धार, संरक्षण एवं विकास में अपना योगदान दे। समाज पिच्छी के पीछे है । पिच्छीधारी जो निर्देश देते है 95 प्रतिशत समाज वही करती है। जब तक हमारे तीर्थ सुरक्षित हैं शास्त्र सुरक्षित है और हमारे गुरुओं की निरन्तराय चर्या हो रही है तब

तक इस महान दि. जैन संस्कृति को कोई छू नहीं सकता। आजकल लोग कुछ भी यदवा–तदवा लिख रहे है और छप भी रहा है हमारी महान मूल दिगम्बर जैन संस्कृति की प्राचीनता को नष्ट करने का प्रयास कर रहे है जिसका मुंह तोड जवाब हमारे सुधी विद्वानों द्वारा दिया जायेगा। मैं समाज को आश्वस्त करना चाहता हूँ हमारे समाज के शोधक विद्वान सक्षम है यदि उन्हें समाज का संरक्षण प्राप्त हो तो वे ऐसी किसी भी योजना को विफल कर सकते हैं।

वर्षायोग में तीर्थविकास के संकल्प की भावना को विकसित करने के निवेदन सहित

अनभ्र वज्रपात

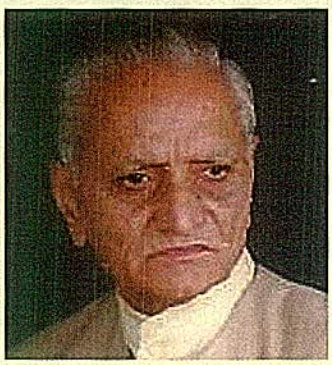

प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी जैन

1933–2018

दान परिग्रह का प्रायश्चित है

इन्दौर 6.5.17

ऋषभदेव गौरव न्यास, इन्दौर के तृतीय सम्मान समारोह में सारस्वत अतिथि के रूप में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए न्यास के परामर्शदाता एवं अर्हत् वचन सम्पादक मण्डल के अध्यक्ष, मूर्धन्य जैन विद्वान प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी जैन फिरोजाबाद का 8 अगस्त 2018 को निजनिवास फिरोजाबाद में शांतिपूर्वक निधन हो गया। 8 अगस्त की प्रातः आपको महान दिगम्बर जैनाचार्य राष्ट्रसंत आचार्य श्री ज्ञानसागर जी का आगरा में संबोधन प्राप्त हुआ। आचार्यश्री ने कहा कि ' आपने माँ जिनवाणी की बहुत सेवा की है। आपका यह अंतिम समय चल रहा है। शुद्ध–बुद्ध आत्म तत्व का स्मरण करें। इसके बाद आचार्यश्री ने णमोकार मंत्र सुनाया। प्राचार्य जी के निधन से जैन समाज की अपूरणीय क्षति हुई है । तीर्थों के संरक्षण एवं विकास की वे जीवन पर्यन्त प्रेरणा देते रहे। फिरोजाबाद के समीप चन्द्रवाड क्षेत्र आपके मार्गदर्शन में ही विकसित हुआ है।

तीर्थ क्षेत्र कमेटी आपके निधन पर दुःख व्यक्त करते हुए उनकी आत्मा कर शीघ्र मुक्ति की कामना करती हैं।

डॉ. अनुपम जैन
प्रधान सम्पादक

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 9 अंक 2 अगस्त 2018

श्रीमती सरिता एम.जैन	अध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.	उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल एम.दोशी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री पंकज जैन	उपाध्यक्ष
श्री हुकम जैन 'काका'	उपाध्यक्ष
श्री संतोष पेंढारी	महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया	कोषाध्यक्ष
श्री विनोद वाकलीवाल	मंत्री
श्री वीरेश सेठ	मंत्री
श्री शरद जैन	मंत्री
श्री खुशाल जैन सी.ए.	मंत्री

प्रधान संपादक
प्रो.अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
उमानाथ दुबे

परामर्श मंडल

डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
श्री शांतिलाल जैन जांगड़ा, उदयपुर
प्रो.डॉ.अजित दास, चेन्नई
प्रो.डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
Website : www.digamberjainteerth.com

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

इस अंक में

विघ्नहर्ता तीर्थंकर पार्श्वनाथ के सिद्धांत हैं सर्वथा व्यावहारिक	10
सात सौ जैन मुनियों की रक्षा का प्रतीक- वात्सल्य पूर्णिमा (रक्षाबंधन)	12
प्रदर्शन नहीं आत्मदर्शन का पर्व है पर्युषण	15
आत्म विकास की धर्मिक यात्रा है पावन पर्युषण महापर्व	16
गुणों से भरे हुए आत्मकल्याणक के हैं ये दस धर्म	18
भारत के महान वैज्ञानिक विक्रम साराभाई जैन को नमन	19
भारतीय संस्कृति के दैदीप्यमान नक्षत्र आचार्य श्री विद्यासागर जी	20
आचार्य विद्यासागर जी महाराज का जीवन जन जन के मन का प्रेरणा स्त्रोत बन गया	24
जैन श्रमण संस्कृतीचा वारसा .....कुंडल जि. सांगली (महाराष्ट्र)	26
Report of the Bh. Dig. J. T. K. Committee - Karnataka Unit 2013-2018	28
हमारे नऐ बने सदस्य	36

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवधर्न और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिए

संरक्षक सदस्य	रु.5,00,000/- प्रदान कर
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/- प्रदान कर
सम्मानीय सदस्य	रु. 31,000/- प्रदान कर
आजीवन सदस्य	रु. 11,000/- प्रदान कर

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, चरिटेबल ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब सोसायटी या कार्पोरेट बॉडी भी उपरोक्त प्रावधान के अन्तर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्ष के लिए होगी।

2) जो सदस्य इनकम टैक्स की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अन्तर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।

3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

परमपूज्य प्रज्ञाश्रमण सारस्वताचार्य १०८ श्री देवनंदीजी महाराज का संक्षिप्त जीवन परिचय

मध्यप्रदेश के बुदेलखंड प्रान्त की शाहगढ धर्मनगरी का अहोभाग्य है कि परमपूज्य प्रज्ञाश्रमण सारस्वताचार्य श्री देवनंदीजी महाराज के रूप में १५ अगस्त १९६३ को एक साधारण परिवार में बालक मुलायमचंद्र का जन्म हुआ। पिता प्रेमचन्द एवं माता शीला देवी द्वारा प्रारम्भ से ही धार्मिक संस्कारों का आरोपन हुआ।

प. पू. गणाधिपति गणधराचार्य श्री १०८ कुन्थुसागरजी महाराज के पावन करकमलों से दि. ५ फरवरी, १९८१ को आपने क्षुल्लक दीक्षा ली तथा दि. ३१ मार्च १९८२ को मात्र १९ वर्ष कि आयु में महाव्रतों को ग्रहण कर ' मुनि देवनन्दिजी ' बन गये।

शब्द शैली के धनी, गुरूदेव के शब्द सीमित, प्रिय, भाषा समिती से युक्त, आगम की पुष्टि करने वाले एवं दुसरों के हृदय परिवर्तन करनेवाले होते हैं। जब आपके प्रवचन होते हैं तो मानो साक्षात सरस्वती का ही अवतरण होता है। अत्यंत क्लिष्ट विषय भी आप सहजता से नये नये शब्दों से सीचते हैं। आपके शब्द मंत्र, जादू व औषधि के समान सीधे हृदय में प्रवेश कर जाते हैं और हृदय को परिवर्तित कर देते हैं। इसीलिये तो आपको 'सारस्वताचार्य ' कि उपाधि से विभूषित किया गया।

गुरूदेव को तिर्थोद्धारक भी कहा जाता है, शताधिक तीर्थ जो उपेक्षित थे, उनका उद्धार आपके द्वारा किया गया। तामिलनाडु, पौंडिच्चेरी का आपका विहार अपने आप मे सुवर्ण अक्षरो से अंकित रहेगा। अत्यंत विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए आपने जैन साधुओं के लिये दक्षिण के द्वार खोले हैं। जिससे अब वहा दिगम्बर जैन साधुओं का आवागमन सहजता से हो रहा है।

समाधि सम्राट एवं कुशल निर्यापकाचार्य : अत्यंत कुशलता से अनेक वृध्द साधु की सेवा करते हुए उन्हें समाधि प्राप्त कराना अपने आप में एक विशेष उपलब्धि है। कम से कम १०० समाधि आपके मार्गदर्शन में संपन्न हुइ है। आपने अनेक उत्कृष्ट ग्रंथों की रचना की है। ध्यान जागरण, भक्तामर स्तोत्र पर पाँच भागों में विशेष ग्रन्थमाला की रचना की है। मंदिर वास्तु स्थापत्य पर आपने अद्वितीय ग्रन्थ देवशिल्प की महत्वपूर्ण रचना की है। ज्ञान विज्ञान मंत्रो की महिमा, प्रभु महिमा आहार दान विधि इत्यादी अनेक रचनाएं भी आचार्य श्री ने रची हैं।

वास्तुचिंतामणी की रचना कर आपने समस्त मानव जाति का कल्याण किया है। वास्तु निर्माण का अछूता विषय लेकर रचना की है। गत सात शताब्दियों में संभवतः यह ग्रन्थ प्रथमतः किसी दिगम्बर जैन आचार्य ने प्रस्तुत किया है। आपने उपलब्ध प्राचीन ग्रंथों की सामग्री का संचयन कर, अभ्यास कर इस विषय पर अपनी अद्वितीय कृति प्रस्तुत की है। सिध्दक्षेत्र गजपंथाजी और मांगीतुगीजी के मध्य में 'णमोकार तीर्थ' आपके प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में एक आधुनिक, जहाँ णमोकार महामंत्र के पंच परमेष्ठी प्रतिमाएं एवं ६ एकड के भव्य समवशरण का निर्माण होने जा रहा है जो जैन नॉलेज सिटी के नाम से विख्यात हो रहा है।

परम पूज्य आचार्य श्री एवं संघ की श्रवणबेलगोला की यात्रा एक ऐतिहासिक यात्रा रही। णमोकार तीर्थ से पुणे, सातारा, कुन्थुगिरी, इचलकरंजी , भोज ग्राम, कोथली , स्तवनिधी , बेलगाव, धारवाड, हुबली, सौंदामठ, हुमचापद्मावती, ज्वालामालिनी, वरांग, कारकल, रत्नत्रयगिरी, मुडबिदरी , वेणुर, धर्मस्थल, बेलु, हेलिबिड से श्रवणबेलगोला में ४ फरवरी को आगमन हुआ इस वक्त आचार्य श्री के साथ लगभग ३५० साधु साथ में थे उन्होंने भी प्रवेश किया ।

महामस्तकाभिषेक महोत्सव के दरम्यान उपस्थित सभी आचार्य, साधु के बीच आचार्य श्री एक आकर्षण का केंद्र थे। सभी आदरणीय आचार्य एवं साधुओं के साथ धर्म की चर्चा एक अलौकिक क्षण रहता था । महामस्तकाभिषेक दरम्यान धर्मसभा में आचार्य श्री का मंगल उदबोधन सुनने के लिये सभी साधु, श्रावक आकर्षित होते थे। महामस्तकाभिषेक उपरांत श्रवणबेलगोला से होस्पेट,हम्पी, बदामी, बिजापूर, सोलापुर, कुंथलगिरी, आसेगांव, शिरडशहापुर, जिंतुर, कचनेरजी, औरंगाबाद, ऐलोरा, आदी शताधिक तीर्थ, अतिशय क्षेत्र के दर्शन करते हुवे नांदेड महानगर के पंचकल्याणक महोत्सव संपन्न कराते हुवे चातुर्मास हेतु णमोकार तीर्थ पर भव्य अगवानी के साथ मंगल आगमन हुआ। रास्ते में सभी क्षेत्र नगरो में आचार्य श्री एवं संघ की भव्य मंगल अगवानी के साथ प्रवेश होता रहा एवं हर जगह मंगल उदबोधन से लाखों श्रावकों ने लाभ लिया। इस प्रकार ३३०० कि.मी. की ऐतिहासिक खात्रा रही।

ऐसे ज्ञान पुंज, गुणग्राही, प्रशांत मूर्ति, श्रमण रत्नाकर, वात्सल्यमूर्ति, प्रवचन पटु, विशाल हृदयधारी कुशल संघसंचालक, जैन जगत के महान सूर्य, प्रज्ञा श्रमण सारस्वताचार्य १०८ श्री देवनंदी जी महाराज जी के ५५ वें जन्मजयंती महोत्सव के पावन अवसर पर चरणों मे कोटी कोटी नमन ।

परम पूज्य, गुरुवर प्रज्ञाश्रमण आचार्य श्री 108 देवनन्दी जी महाराज की
55वीं जन्म जयंती पर गुरुदेव के श्रीचरणों में शत् - शत् नमन

15-08-2018

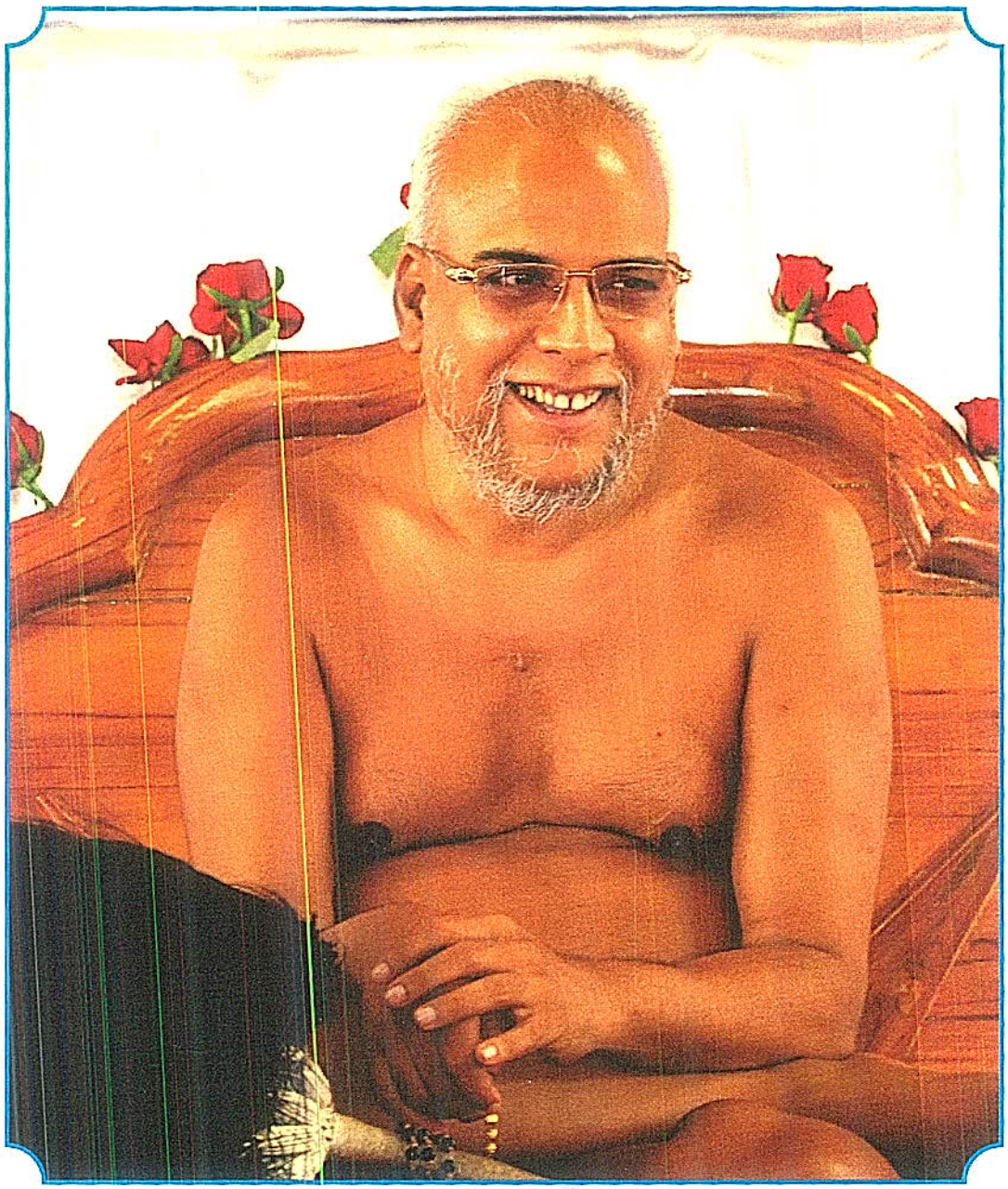

नमनकर्ता

दिनेश सेठी, संगीता सेठी, आशीष सेठी, डॉ. मीनल सेठी, चेन्नई

JAIN STEELS & ALLOYS
VARDHMAN AGENCY
REGAL TRANSWAYS PVT. LTD.

11, Sembudoss Street, Chennai-600 001
044-25231119, 25246193, 42181488, Mobile.: 9444031114, jainsteels_alloys@yahoo.com

विघ्नहर्ता तीर्थंकर पार्श्वनाथ के सिद्धांत हैं सर्वथा व्यावहारिक

–डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

तीर्थंकर पार्श्वनाथ समग्र सामाजिक कान्ति के प्रणेता हैं। तीर्थंकर पार्श्वनाथ की निर्वाण तिथि श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन सम्पूर्ण भारतवर्ष की जैन समाज मंदिरों में प्रातः वेला में निर्वाण लाडू चढाकर अपनी आस्था प्रकट करते हैं, तथा इस दिन मुकुट सप्तमी का व्रत रखा जाता है।

जैनधर्म के तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का व्यक्तित्व अत्यंत विशाल एवं प्रभावक था। उनके सिद्धांत सर्वथा व्यावहारिक थे। अपने उपदेशों में उन्होंने अहिंसा सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह पर अधिक बल दिया था। उन्होंने सम्पूर्ण भारत में अहिंसा का प्रचार–प्रसार किया। इतिहासकारों ने उनके धर्म के संबंध में लिखा है कि इतने प्राचीनकाल में अहिंसा को सुव्यवस्थित रूप देने की कला भगवान् पार्श्वनाथ में थी।

भगवान पार्श्वनाथ का जन्म बनारस के राजा अश्वसेन और रानी वामादेवी के यहां पौष कृष्ण एकादशी के दिन हुआ था। पार्श्वनाथ ने विवाह नहीं किया था। तीस वर्ष की अवस्था में एक दिन राजसभा में वे अयोध्या नरेश जयसेन के दूत से 'ऋषभदेव चरित' सुन रहे थे। सुनते ही उन्हें वैराग्य हो गया। तब अश्ववन में जाकर उन्होंने जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की। तीन माह तक कठोर तप किया। दिगम्बर रहना, पैदल चलना, एकबार विधिपूर्वक भोजन और जल ग्रहण करना, यत्र–तत्र विहार करके जीवों को धर्मोपदेश देना, रात्रि में मौन रहना आदि जैसी उनकी कठिन दिनचर्या थी।

उन्होंने पौष कृष्ण की 11वीं तिथि को दीक्षा ली और **श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन सम्मेदशिखरजी पर्वत पर मोक्ष प्राप्त कर लिया।** वर्तमान में सम्मेदशिखरजी झारखंड प्रांत में स्थित है। यह स्थान जैन समुदाय का प्रमुख तीर्थस्थान है। जिस पर्वत पर पार्श्वनाथ को निर्वाण प्राप्त हुआ वह पारसनाथ पर्वत के नाम से जाना जाता है। लाखों श्रद्धालु यहां दर्शनार्थ आते हैं।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ क्षमा के प्रतीक हैं। उनके समय में तापस–परंपरा का प्रचलन था। तप के नाम पर लोग अज्ञानतापूर्वक कष्ट उठा रहे थे। उन्होंने व्यावहारिक तप पर जोर दिया। इसके अनुसार पापों से विरक्त होना ही धर्म है। ये पाप हैं–हिंसा, असत्य, चोरी और धन का संग्रह। यह आत्मसाधना का पवित्र मार्ग है। उन्होंने अपने उपदेशों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह पर अधिक बल दिया। उनके सिद्धांत व्यावहारिक थे, इसलिए उनके व्यक्तित्व और उपदेशों का प्रभाव जनमानस पर पड़ा। आज भी बंगाल, बिहार, झारखंड और उड़ीसा में फैले हुए लाखों सराकों, बंगाल के मेदिनीपुर जिले के सदगोवा ओर उडीसा के रंगिया जाति के लोग पार्श्वनाथ को अपना कुल देवता मानते हैं। पार्श्वनाथ के सिद्धांत और संस्कार इनके जीवन में गहरी जड़ें जमा चुके हैं। इसके अलावा सम्मेदशिखर के निकट रहने वाली भील जाति पार्श्वनाथ की अनन्य भक्त है।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की भक्ति में अनेक स्तोत्रों का आचार्यों ने सृजन किया है, जैसे– श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र, कल्याण मंदिर स्तोत्र, इन्द्रनंदि कृत पार्श्वनाथ स्तोत्र,

राजसेनकृत पार्श्वनाथाष्टक, पद्मप्रभमलधारीदेव कृत पार्श्वनाथ स्तोत्र, विद्यानंदिकृत पार्श्वनाथ स्तोत्र आदि। स्तोत्र रचना आराध्यदेव के प्रति बहुमान प्रदर्शन एवं आराध्य के अतिशय का प्रतिफल है। अतः इन स्तोत्रों की बहुलता भगवान पार्श्वनाथ के अतिशय प्रभावकता का सूचक है। भारतीय संस्कृति की प्रमुख धारा श्रमण परम्परा में भगवान पार्श्वनाथ का ऐतिहासिक एवं गौरवशाली महत्व रहा है। भगवान पार्श्वनाथ हमारी अविच्छिन्न तीर्थंकर परम्परा के दिव्य आभावान योगी ऐतिहासिक पुरुष हैं। **सर्वप्रथम डॉ. हर्मन याकोबी ने 'स्टडीज इन जैनिज्म' के माध्यम से उन्हें ऐतिहासिक पुरुष माना।**

"पार्श्वयुग में अब तक जो जीवन–मूल्य व्यक्ति–जीवन से संबद्ध थे, उनका समाजीकरण हुआ और एक नूतन आध्यात्मिक समाजवाद का सूत्रपात हुआ। जो काम महात्मा गांधी ने उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अहिंसा को लोकजीवन से जोड़ कर किया, वही काम हजारों वर्ष पूर्व भगवान पार्श्वनाथ ने अहिंसा की व्याप्ति को व्यक्ति तक विस्तृत कर सामाजिक जीवन में प्रवेश दे कर दिया। यह एक अभूतपूर्व क्रान्ति थी, जिसने युग की काया ही पलट दी।

भगवान पार्श्वनाथ की जीवन–घटनाओं में हमें राज्य और व्यक्ति, समाज और व्यक्ति तथा व्यक्ति और व्यक्ति के बीच के संबंधों के निर्धारण के रचनात्मक सूत्र भी मिलते हैं। इन सूत्रों की प्रासंगिकता आज भी यथापूर्व है। हिंसा और अहिंसा का द्वन्द भी हमें इन घटनाओं में अभिगुम्फित दिखाई देता है। ध्यान से देखने पर भगवान पार्श्वनाथ तथा भगवान महावीर का समवेत् रूप एक सार्वभौम धर्म के प्रवर्तन का सुदृढ़ सरंजाम है।'

तीर्थंकर पार्श्वनाथ तथा उनके लोकव्यापी चिंतन ने लम्बे समय तक धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र को प्रभावित किया। उनका धर्म व्यवहार की दृष्टि से सहज था, जिसमें जीवन शैली का प्रतिपादन था। राजकुमार अवस्था में कमठ द्वारा काशी के गंगाघाट पर पंचाग्नि तप तथा यज्ञाग्नि की लकड़ी में जलते नाग–नागिनी का णमोकार मंत्र द्वार उद्धार कार्य की प्रसिद्ध घटना यह सब उनके द्वारा धार्मिक क्षेत्रों में हिंसा और अज्ञान विरोध और अहिंसा तथा विवेक की स्थापना का प्रतीक है।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने मालव, अवंती, गौर्जर, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, अंग–बंग, कलिंग, कर्नाटक, कोंकण, मेवाड़, द्रविड, कश्मीर, मगध, कच्छ, विदर्भ, पंचाल, पल्लव आदि आर्यखंड के देशों में विहार किया। उनकी ध्यानयोग की साधना वास्तव में आत्मसाधना थी। भय, प्रलोभन, राग–द्वेश से परे। उनका कहना था कि सताने वाले के प्रति भी सहज करुणा और कल्याण की भावना रखें। तीर्थंकर पार्श्वनाथ की भारतवर्ष में सर्वाधिक प्रतिमाएं और मंदिर हैं। उनके जन्म स्थान भेलूपुर वाराणसी में बहुत ही भव्य और विशाल दिगम्बर और श्वेताम्बर जैन मंदिर बना हुआ है। यह स्थान विदेशी पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र है। पार्श्वनाथ की जयंती पर जहां वाराणसी सहित पूरे देश में जन्मोत्सव धूमधाम से श्रीजी की शोभायात्रा के साथ मनाया जाता है वहीं निर्वाण दिवस पर सम्मेदशिखर जी सहित पूरे देश में निर्वाण लाडू चढाकर धूमधाम से मनाते हैं, इस दिन **मुकुट सप्तमी का व्रत** रखकर इसे पूरे देश में जैन समुदाय द्वारा पूरी श्रद्धा और उत्साह पूर्वक मनाने की परंपरा है।

★★★★

आमेर में भगवान नेमिनाथ मोक्ष कल्याणक मनाते हुए

सात सौ जैन मुनियों की रक्षा का प्रतीक- वात्सल्य पूर्णिमा (रक्षाबंधन)

- आचार्य राजकुमार जैन, नई दिल्ली

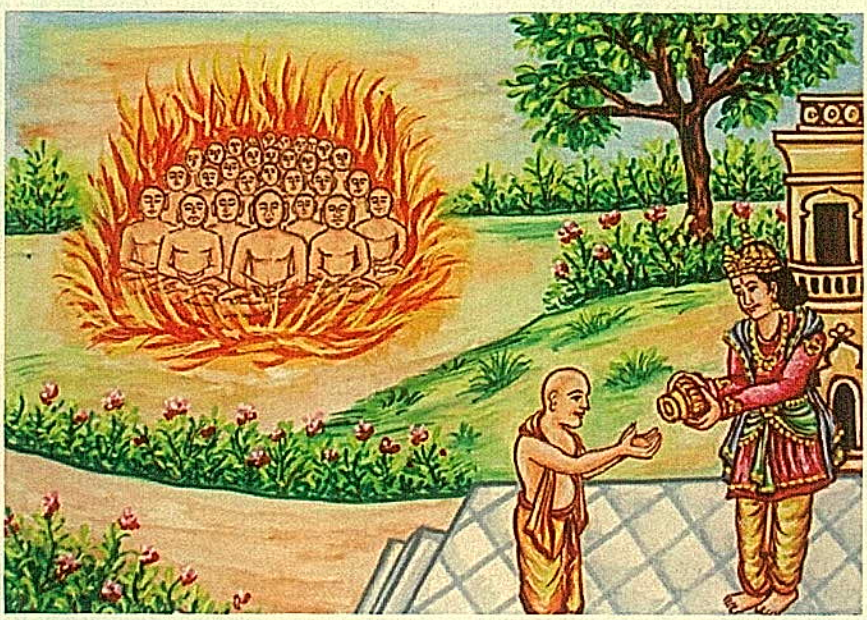

भारतीय पर्वों की श्रृंखला में पावन पर्व रक्षा बन्धन का महत्वपूर्ण स्थान है। यह पर्व भारतीय जन जीवन में मातृत्व, प्रेम एवं सौहाद्रपूर्ण स्नेह की पवित्र निर्मलधारा को प्रवाहित करता है। भगिनी द्वारा भ्राता के हाथ में बांधा गया पावन रक्षासूत्र अबला की रक्षा का प्रतीक बन जाता है और भ्राता अपने कर्त्तव्य के प्रति सदैव सजग रूप से रक्षा सूत्र की आन का निर्वाह जीवनपर्यन्त करता है। अत: यह मात्र भौतिक बन्धन ही नहीं है, अपितु भावना पूर्ण स्नेह सिक्त हृदय बन्धन है।

जैन धर्म मैं रक्षा बन्धन पर्व का अपना विशेष महत्व है। जैनधर्म में रक्षा बन्धन का लौकिक महत्व उतना नहीं है, जितना धार्मिक महत्व है। अत: यह पर्व मनुष्य की आध्यात्मिक अभ्युत्थान हेतु विशेषत: प्रेरित करता है। जैन धर्म में इस पर्व से सम्बन्धित एक कथा विशेष का उल्लेख मिलता है जिसका धार्मिक दृष्टि से पड़ा महत्व है। कथा का प्रमुख अंश निम्न प्रकार है:-

एक बार सात सौ जैन मुनियों पर घोर उपसर्ग हुआ और समस्त मुनि संघ पर भविष्य संकट छा गया। तब मुनिश्री विष्णु कुमार ने अपनी ऋद्धियों आदि द्वारा संघ पर हो रहे उपसर्ग को शान्त किया और सात सौ मुनियों की रक्षा की। तब ही से यह पर्व जैन समाज द्वारा रक्षा पर्व के रूप में मनाया जाने लगा। घटना प्रसंग का प्रारम्भ तब से होता है जब जैन धर्म के उन्नीसवें तीर्थंकर भगवान मल्लिकुमार के शासन काल में उज्जयिनी नगरी में श्री वर्मा नामक राजा राज्य करता था। राजा विद्वान, गुणी और धर्मात्मा था। उसके राज्य संचालन में परामर्श देने वाले एवं सहायता करने वाले बलि, बृहस्पति, प्रह्लाद और नमुचि नामक चार बुद्धिमान एवं पराक्रमी मंत्री थे। ये चारों मंत्री यद्यपि योग्य एवं गुणी थे। किन्तु जैन धर्म के प्रति उनका कट्टर विरोध था जबकि राज जैन धर्मानुयायी था।

एक बार उज्जयिनी में सात सौ जैन मुनियों का विशाल संघ विचरण करता हुआ गया। उस समय संघ का नेतृत्व श्री अकम्पनाचार्य जी कर रहे थे। नगर में संघ के पदार्पण का समाचार सुनते ही नगर वासी जन पूजन द्रव्य लेकर उनके दर्शन हेतु जाने लगे। राजा को भी जब यह सामाचार ज्ञात हुआ तो उन्होंने भी मुनिवरों के दर्शन लाभ लेने की इच्छा से मंत्री सहित वहां जाने का निश्चय किया। मंत्रियों को भी अनिष्ठा पूर्वक राजा के साथ जाना पड़ा।

संघ के नायक श्री अकंपनाचार्य द्वादशांग के पाठी एवं निमित्त ज्ञानी थे। निमित्त ज्ञान से किसी अनिष्ट प्रसंग का ज्ञान कर उन्होंने संघ के समस्त मुनियों को आदेश दिया कि राजा के साथ जब मंत्रिगण दर्शनार्थ यहां आवें तब कोई भी उनके साथ किसी प्रकार का वाद विवाद अथवा शास्त्रार्थ न करे। अन्यथा समस्त संघ पर महान संकट आने की आशंका है। आचार्य श्री के आदेश को समस्त मुनियों ने शिरोधार्य किया। अत: जब राजा और मंत्रीगण दर्शनार्थ वहाँ आए उस समय आचार्य श्री की आज्ञानुसार समस्त मुनिवर मौन धारण कर आत्म ध्यान में लीन हो गए। ध्यानस्थ मुनियों की उपशान्त मुद्रा को देखकर राजा को अत्यन्त हर्ष हुआ। किन्तु मंत्रियों का अन्त: करण कुटिल भावों से भर गया। अत: जब वे नगर की ओर लौट रहे थे तब मंत्रियों ने मुनियों की निन्दा करते हुए राजा से कहा-देखा राजन कितने ढोंगी हैं ये सब मुनि गण आपके पहुंचने पर ध्यान का ढोंग करके चुपचाप बैठे रहे, ताकि आपके सामने उनकी पोल न खुल जाये।

राजा किन्हीं दूसरे विचारों में निमग्न था। अत: मंत्रियों की बात पर उसने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। मंत्रियों ने राजा के मौन को अपनी बात का समर्थन समझा और वे मुनि-निन्दा हेतु अधिक प्रोत्साहित हुए।

उसी समय सामने से श्रुतसागर नामक एक मुनिराज आ रहे थे जो नगर में आहार ग्रहण करने हेतु गए थे। उन्हें आचार्य जी के आदेश के विषय में ज्ञात नहीं था। अत: वे निर्विकार भाव से बिना किसी अनिष्ट की आशंका के चले आ रहे थे। सामने से आते हुए मुनिराज को देखकर मंत्रियों का मन पुन: कुटिल भावों से भर गया और उन्होंने मुनिराज की निन्दा करते हुए राजा से कहा देखिये राजन्! यह मुनि अपना उदरपूरण कर बैल की तरह चला आ रहा है।

मुनिराज ने मंत्रियों के वचन सुने। किन्तु वे शान्त रहे और किसी भी प्रकार का विकार अपने अन्त: करण में उत्पन्न नहीं होने दिया। पुन: मंत्रियों ने मुनिराज के समय ही संघ के प्रति भी निन्दा वचन कहे। जिसे सुनकर मुनिराज विचलित हुए बिना नहीं रह सके। वे उन निन्दा वचनों को सहन न कर सके। उन्हें आचार्य श्री द्वारा प्रदत्त आज्ञा के विषय में ज्ञान नहीं था। अत: उन्होंने मंत्रियों को सम्बोधित करते हुए कहा- तुम्हें अपनी विद्या का मिथ्याभिमान है। यदि यथार्थ विद्या है थारक हो तो मेरे साथ शास्त्रार्थ कर अपने यथार्थ ज्ञान का

प्रदर्शन करो। तब ही वास्तविकता ज्ञात हो सकेगी।

मुनिवर के वचन सुनकर मिथ्याभिमानी मंत्रियों को तत्काल क्रोध आ गया और वे तत्क्षण मुनिराज के साथ शास्त्रार्थ करने के लिए तैयार हो गये। किन्तु मुनिराज के यथार्थ ज्ञान के समक्ष मंत्रियों का मिथ्या ज्ञान क्षण भर टिक न सका और वे निरुत्तर हो गए। जिस प्रकार एक ही दिनकर का अबाधित प्रकाश चतुर्दिक में व्याप्त अन्धकार को दूर कर देता है उसी प्रकार श्रुतसागर मुनिराज ने अनेकान्तवाद के युक्तिबल से क्षण मात्र में उन मंत्रियों के मिथ्याभिमान एवं मिथ्या ज्ञान को निरस्त कर उन्हें निरुत्तर कर दिया। राजा के समक्षा निरुतर एवं अपमानित हुए वे मंत्री उस समय तो विष का घूंट पीकर राजा के साथ चल दिए। किन्तु उनके मन में प्रतिशोध की तीव्र भावना जाग्रत हो उठी और इसके लिए वे उचित अवसर व उपाय खोजने लगे। साथ ही सब तरह से वे अपने आपको असहाय सा अनुभव करने लगे।

इधर जब मुनि श्रुतसागर ने अपने संघ में आकर आचार्य श्री की सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाया तो वे संघ पर आने वाले भावी संकट के निवारण हेतु उपाय सोचने लगे। अंत में उन्होंने श्रुतसागर मुनि से कहा यह तो ठीक नहीं हुआ। अब तो निश्चित रूप से संघ पर कोई भारी विपत्ति आने की आशंका है। वस्तु जो घटित हो चुका है उसका अनुचिन्तन न कर अब सम्पूर्ण संघ की रक्षा के लिए तुम उसी स्थान पर जाकर कायोत्सर्ग ध्यान में स्थित हो जाओ।

आचार्य देव की आज्ञा को शिरोधार्य कर मुनि श्रुतसागर अविचलित भाव से समस्त मुनिसंघ की रक्षा हेतु वहां से चलकर शास्त्रार्थ वाले स्थान पर आकर सुमेरु पर्वत के समान निश्चलता के साथ धैर्यपूर्वक कायोली ध्यान में लीन हो गए।

इधर अपमानित एवं पराजित हुए अपने मानभंग का प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से रात्रि में मुनिराज का वध करने हेतु नगर के बहार आए। मार्ग में शास्त्रार्थ वाले स्थान पर ही मुनिवर को ध्यानस्थ देकर उनकी प्रसन्नता की सीमा नहीं रही। परस्पर मंत्रणा करने के पश्चात् उन्होंने निर्णय किया और बोले यही दुष्ट हमारा अपमान करने वाला है। अत: पहले इसे यहीं समाप्त कर देना चाहिए।

ऐसी विकृत और दुष्ट भावना से पूरित होकर चारों मंत्रियों ने मुनि के भिन्न-भिन्न अंग छेद करने के उद्देश्य से एक साथ बग उठाई और मुनिराज पर प्रहार किया। किन्तु मुनिराज के पूर्वजन्मकृत पुण्य प्रभाव से वहां वनदेवी प्रकट हुई और उन्होंने चारों दु:ष्ट मंत्रियों को तत्काल वहीं कीलित कर दिया। अर्थात् कील की भांति वे अपनी यथावत् मुद्रा और स्थिति में वहीं गड़ गए और रातभर टस से मस न हो सके। ऐसा प्रतीत होता था मानों वहां चार मूर्तियां स्थापित कर दी गई हों।

प्रात:काल नगरवासी जन जब वहां से निकले तो ध्यानस्थ मुनिराज एवं वडग्र उठाए हुए चारों कीलित मंत्रियों को देखकर उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। मंत्रियों की दुष्टता की बात क्षण मात्र में सारे में फैल गई। सारे नगरवासी इस अभूतपूर्व दृश्य को देखने के लिए उमड़ पड़े। समाचार सुनकर राजा स्वयं भी वहां पहुंचा। कुछ देर बाद जब वन देवी का प्रभाव समाप्त हुआ और चारों मंत्री पुन:अपनी स्वाभाविक स्थिति में आ गए तो लज्जा के कारण नगरवासियों एवं राजा के साथ अपना सिर ऊँचा न कर सके। राजा ने उन्हें धिक्कारते हुए कहा- धिक्कार है तुम्हें। तुम लोग इन निर्दोष मुनिराज का वध करने आए थे। ऐसे पापियों एवं दुष्ट लोगों के लिए मेरे नगर में कोई स्थान नहीं है।

इतना कहकर राजा ने उन चारों मंत्रीयों को गधे पर बैठाकर नगर के बाहर निकाल दिया। वहां से अपमानित व लज्जित होकर निकले हुए ये चारों मंत्री हस्तिनापुर की ओर चल दिए। मुनिसंघ का उपद्रव दूर हुआ जानकर समस्त मुनियों ने अपना ध्यान समाप्त किया और श्री अंकपनाचार्य देव अपने सात सौ मुनियों के संघ सहित वहां से विहार करते हुए चल दिए।

जिस समय यह घटना घटित हुई उस समय हस्तिनापुरी में पदम राजा राज्य का संचालन करते थे। किन्तु उस समय वे अपने पड़ोसी राजा सिंहबल से बहुत परेशान थे। इधर उज्जयिनी से निष्कासित चारों मंत्रियों ने अपने बुद्धि कौशल से सिंहबल को कैदकर उसे पदम राजा के समक्ष प्रस्तुत किया। इससे पदम राजा उन मंत्रियों पर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। अपने मंत्री परिषद में उन्हें स्थान दे दिया। साथ ही यथेष्ठ वस्तु मांगने का वचन भी दिया। मंत्रियों ने किसी उपयुक्त समय पर भविष्य में वचन लेने का निवेदन कर उस वचन को भविष्य के लिए सुरक्षित करा लिया।

उधर श्री अंकपनाचार्य भी अपने सात सौ मुनियों के संघ सहित विहार करते हुए कुछ दिनों बाद हस्तिनापुरी में पधारे और वहीं नगर से बाहर एक उद्यान में चतुर्मास योग धारण किया। प्रजा जन अत्यन्त उत्साहपूर्व उनकी वन्दना करने लगी। श्री अंकपनाचार्य के संघ का आगमन सुनते ही बलि आदि चारों दुष्ट मंत्री उज्जयिनी में हुए अपने घोर अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए उपाय ढूंढने लगे। किन्तु ये जानते थे कि पदम् राजा मुनियों का परम भक्त है। अत: उनके ऊपर अपना वश नहीं चल सकेगा। उसी समय बलि को राजा द्वारा दिए गए अपने पूर्व वचन का स्मरण हो आया और वह अपने सहयोगियों से बोला चिन्ता मत करो; राजा ने हमें जो वचन दिया था उसके बदले हम सात दिन का राज्य मांग लें। बस, शासन हमारे हाथ में आने पर राजा हमारे कार्य में हस्तक्षेप नहीं कर पायेगा।

ऐसा विचार कर वे चारों दुष्ट मंत्री राजा के पास गए और अपने पूर्ववचन का स्मरण दिलाते हुए उसके बदले में सात दिन का राज्य मांग लिया। यह सुनते ही राजा स्तब्ध रह गया। उसे किसी अनर्थ की आशंका हुई। किन्तु वचनबद्ध होने के कारण वह विवश था। सात दिन के लिए शासन की बागडोर दुष्ट मंत्रियों के हाथ में चली गई।

शासन हाथ में आते ही चारों दुष्ट मंत्रियों ने एक महान यज्ञ के बहाने मुनिसंघ पर घोर महान उपसर्ग प्रारम्भ कर दिया। जहां पर मुनिसंघ विराजमान था वहीं उनके चारों तरफ एक यज्ञ मण्डप की रचना कर उसमें चारों तरफ लकड़ियों के ढेर लगवा दिए। उसमें भीषण अग्नि प्रज्वलित करके उसमें पशुओं का होम करना प्रारम्भ कर दिया। यज्ञ का धुंआं और पशु होम की दुर्गन्ध से मुनिसंघ को असह्य वेदना और कष्ट झेलना पड़ा। इस प्रकार उन्होंने

मुनि संघ को घोर कष्ट दिया। इतना कष्ट होने पर भी शान्त मुद्रा धारण कर मुनिवर अत्यन्त धैर्यपूर्वक कष्ट को सहने करते हुए समेरु सदृश निश्चल चित्त से निर्विकार भावयुत आत्मध्यान में लीन हो गए। उनके मन में कष्ट देने वालों के प्रति किंचित् मात्र भी क्रोध या प्रतिशोध की भावना नहीं हुई। इस कष्ट को वे अपना पूर्वजन्मकृत अशुभ कर्म का फल मान रहे थे। अत: निर्विकार भाव से उसे वे सहन कर रहे थे।

हस्तिनापुरी में जब यह घटना घट रही थी तब मुनि श्री विष्णु कुमार के गुरु श्रुतसागर जी महाराज मिथिला नगरी में विराजमान थे। वे निमित्त ज्ञान ज्योतिष आदि के ज्ञाता थे। आकाश में अचानक श्रवण नक्षत्र को कांपता हुआ देखकर उनके मुख से अचानक हा शब्द निकला। गुरुमुख से यह उद्गार शब्द सुनकर पुष्पदन्त नामक एक क्षुल्लक ने इसका कारण पूछा। मुनिराज ने कहा हस्तिनापुरी में अकंपनाचार्य आदि 700 मुनियों पर पापी बलि द्वारा घोर उपसर्ग किया जा रहा है।

गुरुमुख से यह सुनते ही पुष्पदन्त क्षुल्लक के दृश्य में संघ के प्रति वात्सल्य भाव उमड़ आया। उन्होंने गुरु जी से उपसर्ग निवारण का उपाय पूछा। मुनिराज ने बतलाया कि विष्णु कुमार मुनि को विक्रिया ऋद्धि प्रकट हुई है और उस ऋद्धि के प्रभाव से वे उपसर्ग को शान्तकर मुनिसंघ की रक्षा कर सकते हैं।

क्षुल्लक पुष्पदन्त तत्काल ही विष्णुकुमार मुनि के पास पहुंचे और श्री गुरु जी द्वारा बतलाई गई सम्पूर्ण घटना उन्हें कह सुनाई। विष्णुकुमार मुनि को तो अपनी विक्रिया अदि का आभास ही नहीं था। पुष्पदन्त द्वारा भान होने पर परीक्षा के लिए उन्होंने अपना हाथ बढ़ाया तो कहीं भी रुके बिना हाथ काफी दूर तक चला गया।

मुनिसंघ पर हो रहे उपसर्ग का समाचार सुनकर में तत्क्षण हस्तिनापुर पहुंचे। वहां अपने भ्राता राजा पद्म से बोले अरे बन्धु! तुम्हारे राज्य में मुनियों पर यह उपसर्ग और अत्याचार कैसा?

राजा पदम विष्णु कुमार मुनि के चरणों में गिर पड़े ओर अश्रुप्लावित नेत्रों से उनकी ओर देखते हुए तथा अपनी नि:सहाय अवस्था बतलाते हुए क्षमा भाव से बोले-प्रभो! राज्य सत्ता मेरे हाथ में नहीं है। दुष्ट बलि ने मुझे वचन बद्ध करके शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली है। अत: मैं विवश हूँ। भगवन्। आप महासमर्थ हैं। अत: आप ही यह उपसर्ग किसी तरह दूर करके शीघ्र मुनितीर्थ की रक्षा का उपाय कीजिये।

वात्सल्य भावप्रधान मुनि श्री विष्णु कुमार ने अपना मुनित्व छोड़कर विक्रिया ऋद्धि से बौने ब्राह्मण का वेश बनाया और यज्ञ मण्डप में जाकर सुमधुर वचनों से बलि को प्रसन्न कर दिया। प्रसन्न होकर राजा बलि ने ब्राह्मण से कहा- महाराज! आप हमारे यहाँ पधारे हैं- यह हमारा सौभाग्य है। आप जो चाहें नि:संकोच मांग लें।

बौने ब्राह्मण के वेश में मुनिविष्णु कुमार ने कहा में सब भांति से संतुष्ट हूँ। मुझे किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं है।

किन्तु राजा बलि ने जब विशेष आग्रह किया तो अनिच्छापूर्वक ब्राह्मण ने कहा- ठीक है। यदि आपका इतना ही आग्रह विशेष है तो मुझे तीन डग भूमि दे दीजिये।

यह सुनकर राजा बलि को अत्यधिक आश्चर्य हुआ। साथ ही ब्राह्मण के निष्काम भाव को देखकर अत्यधिक प्रभावित भी हुआ। उसने ब्राह्मण को तीन डग भूमि देने का वचन दिया और बोला-महाराज आप जहां चाहें वहां अपने पैरों से तीन डग भूमि नाप लें।

राजा बलि के द्वारा वचन देने के साथ ही मुनि विष्णुकुमार ने अपना बौनापन त्यागकर विक्रिया ऋद्धि के द्वारा अपने स्वरूप को बढ़ाना प्रारम्भ कर दिया। ब्राह्मण के बढ़ते हुए स्वरूप को देखते हुए राजा बलि आश्चर्य से किंर्त्तव्य विमूढ़ हो गया। मुनि विष्णुकुमार ने अपने पैरों को फैलाते हुए कहा- और दुष्ट! देख मेरा एक पैर तो मेरा पर्वत पर है और दूसरा पैर मानुषोत्तर पर्वत पर। बोल, अब तीसरा पैर कहां रखूँ?

विष्णुकुमार की इस विक्रिया से पृथ्वी पर चारों ओर कोलाहल मच गया। देवगण भी आश्चर्य चकित होकर वहां आए और दुष्ट बलि को बांध का विष्णु कुमार की स्तुति करते हुए कहने लगे प्रभो! क्षमा कीजीये। यह दुष्ट बलि का दुष्कृत्य है। वह आपके चरणों में उपस्थित है कृपा कर अपनी विक्रिया को समेट लीजिये।

बलि आदि चारों मंत्री भी विष्णु कुमार के चरणों में गिर पड़े और अपने अपराध के लिए बारम्बार क्षमा याचना करने लगे। उन्होंने आगे दुष्कृत्य के लिए पुन: पुन: पश्चाताप किया। तत्काल ही अकंपनाचार्य आदि सात सौ मुनियों पर घोर उपसर्ग समाप्त हो गया। मुनिश्री विष्णु कुमार ने अपनी विक्रिया समेट ली और चारों और शान्ति छा गई। राजा पदम चारों मंत्रिगण एवं नगरवासी समस्त प्रजाजन अत्यन्त भक्ति पूर्वक मुनियों की वन्दना करने लगे। चारों मंत्रियों ने उनके चरणों में गिरकर अपने घोर अपराध के लिए क्षमा याचना की और अपने द्वारा किए गए दुष्कृत्यों के लिए पश्चाताप करने लगे। इतना ही नहीं? उन्होंने हिंसामय मिथ्यामत का परित्याग कर जैनधर्म ग्रहण कर लिया और उसी के उपासक बन गए।

इस प्रकार मुनिसंघ पर हो रहे उपसर्ग के दूर होने के कारण तथा सात सौ मुनियों की रक्षा होने के कारण वह अनैतिक दिवस रक्षा दिवस के नाम से कहलाया जाने लगा और प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ला 15 पूर्णिमा को रक्षार्थ रक्षाबन्धन। के रूप में मनाया जाने लगा। तब से लेकर अब तक जैन धर्मानुयायियों द्वारा प्रतिवर्ष यह पर्व अत्यन्त हर्ष और उल्लास के साथ धार्मिक रूप में मनाया जाता है। इस पर्व के द्वारा ये असहायों की रक्षा के प्रति अपने कर्तव्य को समझाते हैं और हिंसामय कृत्यों का परित्याग कर अहिंसा को जीवन में आत्मसात करने का प्रयत्न करते हैं।

श्रावण शुक्ल 15 पूर्णिमा के दिन आज भी जैन मन्दिरों में रक्षा-सूत्र रखे जाते हैं। जैन श्रावक गृहस्थ मन्दिरों में जाकर पहले देव दर्शन करते हैं, पश्चात् अत्यन्त श्रद्धा एवं भक्ति के साथ रक्षा-सूत्र को पवित्रता से ग्रहण कर अपने दाहिने हाथ की कलाई में बांध लेते हैं, ताकि उन मुनिवरों की भांति उनकी भी विविध कष्टों एवं अनिष्ट से रक्षा हो सके।

प्रदर्शन नहीं आत्मदर्शन का पर्व है पर्युषण

- ध्रुवकुमार जैन

पर्युषण जैन धर्म का शाश्वत एवं अनादि निधन पर्व है जिसका शुभारम्भ 14 सितम्बर 2018 को हो रहा है। यह पर्व धार्मिक आत्मिक व सांस्कृतिक नव चेतना को जागृति कर मानव में आत्म कल्याण के पथ पर अग्रसर रहने की प्रेरणा पैदा करता है। पर्युषण प्रदर्शन नहीं, आत्म दर्शन का महापर्व है। संसार के प्राणियों को अथाह दुख सागर से निकालकर अनन्त सुख की ओर अग्रसर करने वाले इस पर्व की अपनी एक अलग पहचान है। पर्युषण की शिक्षायें आत्मा में परिशुद्धता और जीवन में पारदशिता लाती है। दुनिया के सभी पर्व और-प्रमोद और खान-पान के लिए जाने जाते हैं, परन्तु पर्युषण इन सबके त्याग का नाम है। पर्युषण भोग का नहीं योग का पर्व है।

पर्युषण शब्द की व्याख्या एवं परिभाषा अलग-अलग रूपों में की गयी है। कहा गया है कि **परि समन्तात् उष्यन्ते दहयन्ते पापकर्माणि, यस्मिन्त तत् पर्युषण** अर्थात जो समस्त रूप से आत्मस्थ कर्मों की निर्जरा करे वही पर्युषण है। पज्जूसन, पज्जोसवण, पज्जोसमण आदि अनेक प्राकृति रूपों से भी इसे जाना जाता है, जिसका अर्थ है स्वभाव में रमण करना। पर्युषण दो शब्दों से मिलकर बना है परि+उष्ण। परि का अर्थ है चारो ओर से या सब तरफ से, तथा उष्ण का अर्थ है दाह। अर्थात जिस पर्व में कर्मों का दाह (विनाश) किया जाये वह है पर्युषण। आत्मा के निकट होना, स्वयं के निकट होना आदि भी पर्युषण का अर्थ है।

पर्युषण का दूसरा नाम दशलक्षण धर्म भी है। 1) उत्तम क्षमा, 2) उत्तम मार्दव, 3) उत्तम आर्जव, 4) उत्तम सत्य, 5) उत्तम शौच, 6) उत्तम संयम, 7) उत्तम तप, 8) उत्तम त्याग, 9) उत्तम आकिंचन्य, 10) उत्तम ब्रह्मचर्य। ये दश धर्म नहीं, बल्कि धर्म के दशलक्षण है, जिन्हें संक्षेप में दश-धर्म शब्दों से अभिहित कर दिया गया है।

पर्युषण एक शाश्वत पर्व है। इसका कोई आरम्भ नहीं है। आगम के अनुसार इस पर्व का आरम्भ दिन सृष्टि का आदि दिन है। कालचक्र के परिवर्तन में कुछ उतार चढ़ाव आते हैं, जिन्हें अवसर्पणी और उत्सर्पिणी के नाम से जाना जाता है। अवसर्पिणी से क्रमशः ह्रास और उत्सर्पिणी में क्रमशः विकास होता है। प्रत्येक अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी में छः-छः काल होते हैं।

छठे काल के अन्त में भरत और ऐरावत क्षेत्र के आर्य खंड में प्रलय होती है। छठे काल के अन्त में संतर्त नामक पवन, पर्वत-वृक्ष-पृथ्वी आदि को चूर्ण कर समस्त दिशा और क्षेत्र में भ्रमण करता है। इस पवन के कारण सारे जीव मूर्छित हो जाते हैं। देवों द्वारा रक्षित 72 युगल तथा अन्य कुछ जीवों के अतिरिक्त समस्त प्राणियों का संहार हो जाता है। इस काल के अन्त में 49 दिनों तक पवन अत्यन्त शीत, क्षार रस, विष, कठोर अग्नि, धूल और धुंआँ की वर्षा एक-एक सप्ताह होती है। इसके बाद उत्सर्पिणी काल का प्रवेश होता है और नवीन युग का आरम्भ होता है। यह प्रलय और सृजन की प्रकिया थी।

छठे काल का अन्त आषाढ़ी पूर्णिमा को और नवीन युग का आरम्भ श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को अभिजित नक्षत्र में होता है। अतः आषाढ़ी पूर्णिमा के बाद श्रावणी प्रतिपदा से 49 दिवस बाद भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी है। इस तरह से भाद्रपद शुक्ल पंचमी उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी के आरम्भ का दिन हो जाता है। इस निमित से सृष्टि के आदि का दिन भाद्रपद शुक्ला पंचमी हो गया और इसी से यह सिद्ध होता है कि यह पर्व शाश्वत और अनादि निधन पर्व है।

पर्युषण पर्व का जैन धर्म में महत्वपूर्ण स्थान है। पूरे विश्व में इससे पवित्र अन्य कोई पर्व नहीं जो मानव को उसके आत्म स्वरूप का दर्शन करा सके। पर्युषण मानव जगत में संयम, साधना और आराधना का बीज अंकुरित कर एक अद्भुत क्रान्ति पैदा करती है। इस पर्व का आगमन समस्त मानव जगत में आत्म कल्याण हेतु चिन्तन का भाव पैदा करना है और यह चिन्तन ही उसे संयम की ओर धकेलती है और उस ओर कदम बढ़ाना ही खुद के पथ को प्रकाशित करना है जो कि इस पर्व के आगमन की एक सच्ची अनुभूति है।

आज का युग भौतिक का युग है। आधुनिकता की होड़ में अग्रणी रोल के लिए यद्यपि वह जीवन रूपी निधी को कचरे के डिब्बे में फेंकता जा रहा है, त्याग से विमुख होकर भूखे भेड़िये की तरह भोग की ओर लपक रहा है और इसी की छत्र छाया में दूसरे के शवों पर खड़ा होकर सुख ढूंढ रहा है, फिर भी पर्युषण की भनक पड़ते ही वह चाहे दस दिनों के लिए ही सही आचरण की शुद्धता पर चिन्तन करना आरम्भ कर देता है। उसे मालुम है कि हिमालय की तरह खड़ा अटल और अभेद्य पर्युषण के दशधर्म अपनी शिक्षाओं से हमें आकृष्ट अवश्य कर लेंगे।

आइये दस दिनों तक चलने वाले विशाल पर्युषण मेला में आत्म कल्याण का कुछ सामान अवश्य खरीदें। पर्युषण मेले में खान-पान, आमोद-प्रमोद का सामान नहीं है, बल्कि यहाँ आत्म-जागरण, आत्म-शोधन और आत्मिक उजाले का सामान बिक रहा है। उत्तम क्षमादि दस धर्मों की विशाल दुकानें सजी हुई है। प्रत्येक दुकान पर परम् वीतरागी गुरु आसनस्थ होकर भव्यों को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। प्रत्येक भव्य वहाँ तक पहुँचना और कुछ न कुछ खरीदना चाहता है परन्तु मेले में घूम रहे काम-क्रोध-मद-लोभ रूपी ठगों के कारण वहाँ तक पहुँचने से डर रहे हैं। यद्यपि कुछ व्रती-पुण्यात्मा अपने-अपने तरीकों से उन दुकानों तक आसानी से पहुँचने का मार्ग बतला रहें हैं, फिर क्यों हम आत्म कल्याण के वस्तुओं को खरीदनें में पीछे हैं और वहाँ तक न पहुँचने का बहाना बना रहे है। जबकि यह मेला केवल दस दिनों तक ही रहेगा और खरीदे हुए सामानों का उपयोग हमेशा-हमेशा के लिए होता रहेगा। जय जिनेन्द्र।

आत्म विकास की धर्मिक यात्रा है पावन पर्युषण महापर्व

– डॉ. नरेन्द्र जैन भारती, सनावद

संसार के समस्त प्राणी सुख और दुख रूप अवस्था में जीवन व्यतीत करते हैं। जो दुखी हैं वह सुख चाहते हैं और जो सुखी हैं वे सुख छोडना नहीं चाहते। दुख से भयभीत होकर परमात्मा का स्मरण कर दुखों से निवृत्ति की प्रार्थना करते हैं लेकिन दुख प्राप्ति के कारणों को छोडना नहीं चाहते। हिंसा झूठ चोरी कुशील और परिग्रह रूप पॉच पापों में संलग्न हैं लेकिन सुख की आकांक्षा रखते हैं। जैन धर्म कहता हैं कि दुखों से छुटकारा चाहते हो तो पाप का त्याग करो। पापों के त्याग के लिए धर्म धारण करो, क्योंकि धर्म से ही सच्चे सुख की प्राप्ति होती है। अतः धर्म की उपयोगिता जानकर उसका पालन आत्म हित और सांसारिक शांति के लिए जरूरी है।

धर्म को धारण करने वाला व्यक्ति कर्मरूपी कलंक को हटाने के लिए निरन्तर पुरुषार्थ करता है। धर्म अर्थ काम और मोक्ष ये पुरुषार्थ चतुष्टय जगत में प्रसिद्ध हैं। इनमें धर्म और मोक्ष पुरुषार्थ आत्महित तथा अर्थ और काम पुरुषार्थ सांसारिक मोह माया के प्रतीक हैं। संसार को माया जाल इसलिए कहा जाता है कि यहॉ आकर व्यक्ति इन्द्रिय विषयजन्य काम विकार से पीडित रहकर जीवन व्यतीत करता है तथा अर्थ संग्रह का भाव एवं परिग्रह का विचार मन में चलते रहने से धर्म से दूर रहता है। इन परिस्थितियों में भी धर्म व्यक्ति को जीवन्मुक्त होने की प्रेरणा देता रहता है। समय समय पर आने वाले आध्यात्मिक पर्व उन्हें दिशानिर्देशन का कार्य करते हैं।

शाश्वत् या आध्यात्मिक महापर्व पर्यूषण एक ऐसा ही महापर्व है जो आत्मशक्ति की अभिव्यक्ति का प्रतीक आत्म साधना और धर्म की आराधना का प्रतीक है। जिसमें व्यक्ति राग द्वेष और मोह रूपी आत्म घातक दुर्गुणों से जीव को दूर रखकर संयम की साधना हेतु प्रेरित करता है।

पर्युषण यह शब्द परि उपसर्ग पूर्वक "वस" धातु से अन प्रत्यय लगाने पर बनता है जिसका अर्थ होता है सम्पूर्ण रूप से आत्म स्वभाव में लीन रहना,ऐसा पुरुषार्थ करना जिसमें सिर्फ आत्मकल्याण निहित हो।

दशलक्षण, सोलहकारण, अष्टान्हिका महापर्व ऐसे हैं जो मानव को सुख शांति प्रदान करते है। पर्यूषण पर्व के सम्बन्ध में कवि धर्म दिवाकर पं. लालचंद जी राकेश लिखते हैं।

पर्व पर्युषण धार्मिक यात्रा होता जिसमें आत्म विकास
उर्ध्वारोहण के प्रयास से जीवन पाता धर्म प्रकाश
धर्म परम संजीवन औषध मिटते हैं असाध्यतम् रोग।
मूल प्रकृति से लौट आत्मा करती है चेतन का भोग ।।

भाद्रपद शुक्ला पंचमी से भाद्रपद शुक्ला अनंत चतुर्दशी तक प्रतिवर्ष सम्पूर्ण विश्व में मनाया जाने वाला यह पर्व हमारे आचार–विचार, व्यवहार एवं जीवन में परिवर्तन की प्रेरणा देता है। उत्तम क्षमा , उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम शौच, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन्य, और उत्तम ब्रह्मचर्य के सिद्धांत हमें सार्थक जीवन कैसे बिताना है इसकी शिक्षा देते हैं। कहा गया है–

आतम के अहित विषय कषाय इनमें मेरी परिणति न जाए

अर्थात् आत्मा का अहित करने वाले विषय और कषायें हैं इसमें मेरी परिणति (भाव) न जायें। पर्यूषण पर्व में कषायों के शमन और पापों से निवृत्ति की प्रेरणा दी जाती है। कषायों को कैसे में वश किया जाये, इस संबंध में कहा गया है –

शमाम्बुभिःक्रोध शिखी निवार्यताम्
नियम्यतां मान मुदार मार्दवैः।
इयं च मायाऽऽर्जवतः प्रतिक्षणं,
निरीहतां चाश्रय लोभ शान्तये।।

अर्थात् क्षमा रूपी जल से क्रोध रूपी आग को बुझाओ, उदार मार्दव भावों से अहंकार का मर्दन करो, आर्जव भावों से माया का त्याग और लोभ की शांति के लिये निर्लोभता का आश्रय लो।

उत्तम क्षमा आत्मा का स्वभाव है लेकिन जब आत्मा क्रोध रूप विकार भाव की वशवर्ती होती है तब मन की प्रवृत्ति स्वभाव से विपरीत कार्य करने लगती है इस अवस्था को क्रोधावस्था का विकार कहते हैं। इस विकार को समाप्त करने के लिए सहनशील बनना पड़ता है यह सहनशीलता ही क्षमा है। जब यह क्षमा रत्नत्रय के साथ होती है तब उसे उत्तम क्षमा कहा जाता है। पयूर्षण पर्व के प्रथम दिन व्यक्ति को सहनशील बनने के लिए क्षमाभाव धारण करने की प्रेरणा प्रवचनों के माध्यम से दी जाती है।

मानव जीवन का प्रमुख शत्रु अहंकार है जो व्यक्ति में मुदिता के भाव जाग्रत नहीं होने देता। व्यक्ति मान कषाय के

कारण धर्म को भूल जाता है। उत्तम मार्दव धर्म भावों में मृदुता लाता है जिससे जीव सभी के प्रति समभाव धारण करता है।जीव मात्र समान हैं ऐसा भाव आने पर वह आर्जव धर्म के स्वभाव में आकर सरलता, स्वच्छता और पवित्र विचारों के साथ जीवन को आगे बढ़ाता है। मन में शुचिता के आने से लोभ वृत्ति समाप्त हो जाती है इसलिए उत्तम शौच धर्म की प्रवृत्ति के अनुसार कार्य करता है। तात्पर्य यह है कि क्रोध, मान, माया और लोभ कषायों के परिशमन के लिए उत्तम क्षमा,उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव और उत्तम शौच धर्म के विचारों के साथ आगे बढ़कर जीवन में सुख शांति तथा आत्महित के लिए पुरूषार्थ करना जरूरी है।

चार कषायों के समाप्त होने पर जब आत्मभाव जागृत होता है तब आत्महित के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई देता, इसे आत्म साक्षात्कार कहते हैं, सत्य का प्रकटीकरण ऐसी परिस्थितियों में निर्मित होता है। इसे उत्तम सत्य कहंते हैं। व्यवहार में सत्य को अपनाने से कई सामाजिक समस्याओं का समाधान होता है। इसलिए हर धर्म सत्य को अपनाने की प्रेरणा देता है। कहा गया है –

हो सत्य से जीवन अलंकृत सत्यमय व्यवहार हो,
हर आन, बान और शान में सत्य ही साकार हो।

उत्तम संयम धर्म पांचों इन्द्रियों के दमन करने से तथा कषायों का निग्रह करने से होता है। उपवास, मन के प्रसार पर नियंत्रण, त्रस स्थावर जीवों की रक्षा से संयम होता है। संयम भाव धारक व्यक्ति पॉच पापों की प्रवृत्ति से बचता है। व्रत धारण के लिए संयम आवश्यक है। जब व्यक्ति इन्द्रियों और अव्रतों पर नियन्त्रण रख लेता है तब आत्म कल्याण के लिए तपस्या करता है जिसे तप धारण कहते हैं। आभ्यन्तर और बाह्य तप के अंतर्गत 12 प्रकार के तप होते हैं। अन्तरंग की शुद्धि के लिये प्रायश्चित, विनय, वैयावृत्ति, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग और ध्यान करता है तथा अनशन अवमौदर्य, वृत्ति परिसंख्यान, रस परित्याग, विविक्त शय्यासन और कायक्लेश तप करके जीवन को भोगों से दूर रखता है। त्याग धर्म कहता हैं– संसार का कोई भी पदार्थ हमारे साथ नहीं जाता, अतः भौतिक वस्तुओं से आशक्ति हटाकर आत्मोन्मुख हो जाओ। परवस्तु परपदार्थों का त्याग कर पुण्यार्जन करो ताकि भविष्य सुखमय बने। श्रावको को उत्तम दान देकर सीमित मात्रा में धनादि रखने की प्रेरणा दी गई। अतः श्रावक औषधि, शास्त्र, अभय और आहार दान देते हैं, दान देना भी चाहिए। नीतिकार कहते हैं–

दानं भोगो नाशस्तिस्त्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।
यो न ददाति भुडक्ते तस्य तृतीया गति भवति ।।

अर्थात् दान,भोग और नाश धन की ये तीन गतियॉ होती हैं जो न दान देता है, न उपभोग करता है उसके धन की तीसरी गति होती है अर्थात् उसके धन का नाश हो जाता है। अतः धन दान अवश्य देना चाहिए। जब धन दान कर देता है और परिग्रह त्याग कर व्यक्ति आत्महित के लिए तत्पर होता है तब आसक्ति का भाव उसे पुनः संसार के प्रपंचों के लिए प्रेरित करता है अतः अपरिग्रह धर्म उसे बताता है कि एक आत्मा को छोड़कर कोई भी पदार्थ मेरा नहीं है अतः मूर्च्छा या ममत्व भाव का त्याग कर आकिंचन्य भाव को धारण करो और ऐसा भाव रखो

अनित्येऽत्रैव संसारे, यावन्मात्र परिग्रहः।
तावन्मात्रस्तु सन्तापस्तस्मात् त्याज्यः परिग्रहः।।

अर्थात् इस अनित्य संसार में जितना परिग्रह है उतना संताप है अतः परिग्रह छोड़ने योग्य है। हम यह भावना भाकर आकिंचन्य धर्म के निकट पहुँच सकते हैं। जैन दर्शन कहता है –

एगो मे सासगो आदा णाणदंसणलक्खणो।
सेसा में बहिरा भावा सव्वे संजोग लक्खणो।

अर्थात् मैं एक अकेला शाश्वत् आत्मा हूँ। जानना देखना मेरा स्वभाव है। शेष जो भाव है वे सब बाहरी हैं तथा संयोग से उत्पन्न होते हैं। ऐसे भावों का के उत्पन्न होने पर उत्तम ब्रह्मचर्य से साक्षात्कार होता है। जो साधको पर पदार्थों से रहित शुद्ध बुद्ध अपने आत्मा में जो चर्या अर्थात् लीनता करा देता है उसे उत्तम ब्रह्मचर्य कहते हैं।

आज यह देखा जा रहा है। कि पयूर्षण पर्व में जैन मंदिरों को सुरूचिपूर्ण ढंग से सजाया,संभारा जाता है। रोशनी से रोशन किया जाता है। सूबह से व्यक्ति अभिषेक पूजा पाठ कर व्रत उपवास रखता है। इससे समय का सदुपयोग तथा शुभ कार्यो में व्यक्ति की प्रवृत्ति देखी जाती है। लेकिन आवश्यकता इस बात की है। कि ऐसा पुरूषार्थ करें ताकि क्रोधादि कषायों की प्रवृत्ति समाप्त हों, भेदभाव ऊँचनीच की भावना से दूर रहकर पॉच पापों से बचें और खानपान पर नियंत्रण रखकर धर्मानुसार कार्य करें। सच्चे देव, शास्त्र, गुरूओं के प्रति आस्थावान रहकर कार्य करें। ताकि हमारा जीवन पर्यूषण पर्व की भावना के अनुरूप बना रह सके। पर्यूषण पर्व के पावन अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनायें।

गुणों से भरे हुए आत्मकल्याणक के हैं ये दस धर्म

- श्रीकिशोर जैन, नई दिल्ली

अब पंचम काल चल रहा है। इसके बाद छठा काल आएगा। उसकी समाप्ति के समय भरतक्षेत्र के आर्यखंड में 7-7 दिन तक प्रचण्ड वायु व बर्फ, खारा पानी व विषैला जल बरसेगा। उसके बाद 7-7 दिन तक भारी-भारी धुएं के गुबार उठेंगे और अन्त में 7 दिन तक बिजली गिरती रहेगी। इस तरह 49 दिनों तक इन प्रलयंकारी प्राकृतिक उपद्रवों से आर्यखण्ड की प्रलय हो जाएगी। इसके बाद इतने ही दिनों तक जल, क्षीर-जल, अमृत जल, रस जल आदि की वर्षा होगी, जिसके कारण उत्सर्पिणी युग का प्रारम्भ होगा। यह दिन भाद्रपद सुदी 5 से आर्यखण्ड में फिर मनुष्यों का आवागमन शुरू हो जाएगा। इसीदिन जैनों का महापर्व दशलक्षण शुरू हो जाता है, जो 10 दिन चतुर्दशी तक मनाया जाता है।

यह पर्व 14 सितम्बर से 23 सितम्बर तक पूरे विश्व में जहां- जहां जैन मंदिर हैं, बड़े उल्लासपूर्वक, हर्ष के साथ मनाया जाता है। सभी जैनभक्त अपने तीर्थंकरों तथा उनके बताए हुए दस धर्म भक्तिपूर्वक भावेंगी।

चातुर्मास के समय निर्ग्रन्थ मुनि मंदिर-मंदिर में विराजमान होते हैं। इन्हीं दिनों जैन धर्म में बताए गए 10 धर्मों का विद्वानों द्वारा कल्याण की भावना बताते हैं। विशेष रुप से आचार्य उमास्वामी द्वारा लिखित तत्वार्थ सूत्र की विवेचना होती है, जिसमें भव्य जीवों के हित की बात बताते हैं।

इस दिन मंदिर की वेदियां भक्तिपूर्वक कंगूरों, तोरण द्वार व चंवर आदि रंगोली से सजाई जाती हैं, जिन्हें देखकर भक्ति की अजस्त्र धारा बहती है। मंदिरों पर बड़ी आकर्षक, शिक्षात्मक रोशनी की जाती है। इससे भव्य जीव धर्म का लाभ प्राप्त करते हैं।

इसका प्रारम्भ क्षमा से होता है और अन्त भी क्षमा द्वारा ही समाप्त होता है। क्षमा धर्म सब धर्मों का सार है। यह संपूर्ण विश्व में क्षमा दिवस के रूप में मनाया जाता है। इससे सात्विक प्रवृत्ति का समावेश होता है।

धर्म का दूसरा लक्षण मार्दव धर्म है। इसका संदेश आत्मा के सरल परिणाम को कहते हैं। इसलिए प्रत्येक मानव को कठोर भाव का त्याग और सरल भाव रखना चाहिए।

तीसरा आर्जव धर्म: मायाचार से युक्त प्राय: मानव ऊपर से हित-मित वचन बोलता है और सौम्य आकृति बनाता है, लेकिन फिर अवसर पाते ही वह मनमानी घात कर बैठता है। बिल्ली चुपचाप दबे पांव से बैठी रहती है। जैसे ही कोई चूहा देखा वह चट से खा जाती है। अत: हमें मायाचारी छोड़कर सरल भाव रखने चाहिए। मायाचारी का धन बिजली चमक के समान है। सदाचार की कमाई कभी भी नष्ट नहीं होती। ऐसे आर्जव धर्म को सदा अपनाना चाहिए।

चौथा शौच धर्म: यह शरीर साबुन, तेल, फुलेल, चंदन आदि से कभी भी सुगंधित नहीं हो सकता। ऐसी भावना को त्यागकर शुद्धात्मा का साधन अपनाना चाहिए। यह दशलक्षण धर्म के चौथे धर्म का संदेश है।

पांचवां सत्य धर्म: सत्य कभी भी भ्रम में डालकर, किसी को भय उत्पन्न करने के लिए या व्याकुलता पैदा करने के लिए, अपना स्वार्थ-सिद्धि के लिए झूठ बोल दे देते हैं। इस प्रकार के कुवचन, गाली-गलौच, मारपीट तक हो जाती है। इसलिए अप्रिय वचन त्यागकर सत्य वचन ही जो दूसरों को कष्टदायक न हो, बोलने चाहिए। अत: माता-पिता को बच्चों को छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से बात सिखनी चाहिए। स्व पर हितकारी मीठ वचन बोलना सिखाएं।

छठां संयम धर्म: स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण और मन पर नियंत्रण रखने का नाम संयम है। जो सज्जन हित का कार्य-अध्ययन, ध्यान, स्वाध्याय, दर्शन-पूजन, तीर्थयात्रा, परिश्रम करते हैं, वह जीवन में कभी दुर्गति प्राप्त नहीं करते।

7 वां तप धर्म: निशदिन हमारी इच्छाएं, तृष्णाएवं बढ़ती रहती है। इच्छाओं को रोकना ही तप कहलाता है। जब कषाय, विषय, आहार, परिग्रह को कम करते हैं तो वह तप ही समझना चाहिए। प्रमाद, आलस्य का त्याग करना ही इस पावन धर्म का संदेश है।

8 वां त्याग धर्म: अत्माशुद्धि के लिए या मनशुद्धि के लिए अपनी इच्छाओं और मर्यादा के अनुसार संकुचित करके अपने ध्यान को प्रभु के चरणों में लगाते हैं और अपने संयम साधन को अपनाते हैं। त्याग के लिए हमें चार प्रकार के दान यथाशक्ति देते दान देते रहना चाहिए। दान देने वाला कभी दरिद्र नहीं होता। गुप्त दान का पुण्य बहुत अधिक है।

9 वां आकिंचन्य धर्म : यह हमें संदेश देता है कि अंतरंग और बहिरंग परिग्रह अपनी आवश्यकता के अनुकूल रखना चाहिए। हमें मृत्यु के बाद शरीर तक को छोड़कर जाना पड़ता है। आत्मा का पुण्य पाप ही हमारे साथ जाएगा, इसलिए सोच-विचार कर अपना कर्तव्य निभाने की ओर रखना चाहिए।

10 वां ब्रह्मचर्य धर्म: ब्रह्मचर्य जीवन को सब जानते हैं कि हमें दूसरी स्त्रियों को माता-बहन के रूप में देखना चाहिए। आज जो घटनाएं सम्पूर्ण देश में हो रही हैं, उससे घातक और घृणास्पद क्या हो सकता है। अत: हमें सद्चरित्र बनना चाहिए और अपने बच्चों को ऐसी शिक्षा दे, जिससे हमारा चरित्र पावन पवित्र बना रहे। इससे महान बल मिलता है, मुख पर तेज चमकता है, वाणी में प्रभाव दमकता है, शरीर निरोग होता है, बुद्धि विकसित होती है। इसलिए अपने बच्चों को क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, संयम आदि पालन के लिए प्रेरणा दें।

इस प्रकार हमने श्रावकों के दस धर्म कहे। गुणों से भरा हुआ आत्मकल्याण के हित यह धर्म सभी को अपनना चाहिए। यदि यह पर्व धार्मिक पर्व हो तो और भी प्रसन्नता होती है, और धार्मिक पर्व में भी दशलक्षण जैसा महापर्व हो तो महाप्रसन्नता और उस महापर्व में यदि गुरु का सान्निध्य भी प्राप्त हो जाये तो फिर कहना ही क्या।

भारत के महान वैज्ञानिक विक्रम साराभाई जैन को नमन

- विजय कुमार जैन, राघौगढ़

भारत माता के महान सपूत जिन्होंने अन्तरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में दुनिया में देश का नाम ऊंचा किया, ऐसे विक्रम अंबालाल साराभाई जैन का १२ अगस्त १९१२को जन्म हुआ था। जन्म दिवस के अवसर पर हम उन्हें स्मरण कर रहे है।

डॉ. विक्रम साराभाई के नाम को अंतरिक्ष कार्यक्रम से अलग नही किया जा सकता। यह बात दुनिया को पता है कि वह विक्रम साराभाई ही थे जिन्होंने अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में भारत को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान दिलाया।

आपका जनम अहमदाबाद में श्री अम्बालाल साराभाई के प्रतिष्ठित जैन परिवारमें हुआ था। आपकी माता जी श्री मती सरला साराभाई थी।आपकीमाता सरला साराभाई ने प्रारंभिक शिक्षा मैडम मारिया मोन्टेसरी की
तरह शुरू हुए पारिवारिक स्कूल में दिलायी। गुजरात कॉलेज से इन्टरमीडिएट तक विज्ञान की शिक्षा पूरी करने के बाद वे सन १९३७ में कैम्ब्रिज (इंग्लैड) चले गये जहाँ १९४० में प्रणमाकृतिक विज्ञान में ट्रायपोज डिग्री प्राप्त की। द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने पर वे भारत लौट आये और बंगलौर स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान में नौकरी करने लगे जहाँ वह सी. वी. रमण के निरीक्षण मेंकॉसमिक रेज पर अनुसंधान करने लगे। द्वितीय विश्व युद्ध कीसमाप्ति पर वे कॉस्मिक रे भौति विज्ञान के क्षेत्र में अपनी डाक्ट्रेट पूरी करने के लिये कैम्ब्रिज लौट गये। सन १९४७ में उष्णकटीबंधीय अक्षांश(ट्रापीकल लैटीच्यूड्स) में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में उन्हें डाक्ट्ररेट की उपाधि से सम्मानित किया गया।

डॉ विक्रम साराभाई को भारत में महान संस्थान निर्माता माना जाता है। उनके द्वारा स्थापित लोकप्रिय संस्थाओं में प्रमुख है भौतिकी अनुसंधान प्रयोग शाला (पीआरएल) अहमदाबाद,भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम)अहमदाबाद, सामुदायिक विज्ञान केन्द्र अहमदाबाद, दर्पण अकादमी फॉर परफार्मिंग आर्टस अहमदाबाद, विक्रम साराभाई
अंतरिक्ष केन्द्र तिरुवनंतपुरम,

डॉ विक्रम साराभाई सांस्कृतिक गतिविधियों में भी गहरी रुचि रखते थे। वे संगीत, फोटो ग्राफी, पुरातत्व, ललित कलाओं और अन्य अनेक क्षेत्रों से जुड़े रहे।धर्म पत्नी श्रीमती मृणालिनी साराभाई के साथ मिलकर उन्होंने मंच कलाओं कीसांस्कृतिक संस्था दर्पण का गठन किया। उनकी बेटी मल्लिका साराभाई बड़ी होकर भरतनाट्यम और कुचीपुड्डी की सुप्रसिद्ध नृत्यांगना बनी।

डॉ होमी जे. भाभा की जनवरी १९६६ में मृत्यु के बाद डॉसाराभाई को परमाणु ऊर्जा आयोग का अध्यक्ष बनाया गया।

साराभाई ने सामाजिक और आर्थिक विकास की विभिन्न गतिविधियों के लिये अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी में छिपी हुई व्यापक क्षमताओं को पहचान लिया था। इन गतिविधियों में संचार, मौसम विज्ञान संबंधी भविष्यवाणी और प्राकृतिक संसाधनों के लिये अन्वेषण आदि सम्मिलित है।

भारत के महान वैज्ञानिक वहुमुखी प्रतिभा के धनीडॉ विक्रम साराभाई का ३० दिसंबर १९७१ को कोवलम,तिरुवनंतपुरम (केरल) में असामयिक स्वर्गवास हो गया। इस महान वैज्ञानिक के सम्मान में तिरुवनंतपुरम में स्थापित थुम्बा इक्वेटोरियल रॉकेट लॉचिंग स्टेशन (टीईआर एल एस) और संबद्ध अंतरिक्ष संस्थाओं का नाम बदल कर विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र कर दिया गया। यह केन्द्र एक प्रमुख भारतीय अंतरिक्ष केन्द्र के रूप में उभरा है। सन १९७४ में सिडनी स्थित अन्तर्राष्ट्रीय खगोल विज्ञान संघ ने निणय लिया कि 'सी ऑफ सेरेनिटी' पर स्थित बेसल नामकमून क्रेटर अब साराभाई क्रेटर केनाम से जाना जायेगा।

डॉ विक्रम साराभाई को भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का जनक माना जाता है। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान को भारतवासी हमेशा
याद रखेंगे। उनका जीवन एवं अनुसंधान कार्य आज की युवा पीढ़ी के लिये निश्चित ही प्रेरणादायक है।

जैन समाज की देश की सवीत्कृष्ट संस्था भारतीय जैन मिलन इस वर्ष को जैन गौरव स्मृति वर्ष के रूप में मना रही है।इस वर्ष में जैन समाज के गौरवशाली महापुरुषों को याद किया जा रहा है। देश के महान सपूत वैज्ञानिक डॉ विक्रम साराभाई जैन के जन्म दिन १२ अगस्त १८ को भारतीय जैन मिलन द्वारा अनेक नगरों के कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है। जन्म दिन पर हम डॉ विक्रम साराभाई को विनम्र श्रृद्धांजलि अर्पित करते है।

भारतीय संस्कृति के दैदीप्यमान नक्षत्र
आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज

–डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

(जैन जगत के महान संत, दिगम्बर सरोवर के राजहंस परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव पूरे वर्ष अनेकानेक उपलब्धियों के साथ पूरे देश और दुनिया में भारी उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया गया। 17 जुलाई 2018 को उनके मुनिदीक्षा दिवस पर यह स्वर्णिम वर्ष सम्पन्न हो जायेगा। इस अवसर पर प्रस्तुत है विशेष आलेख)

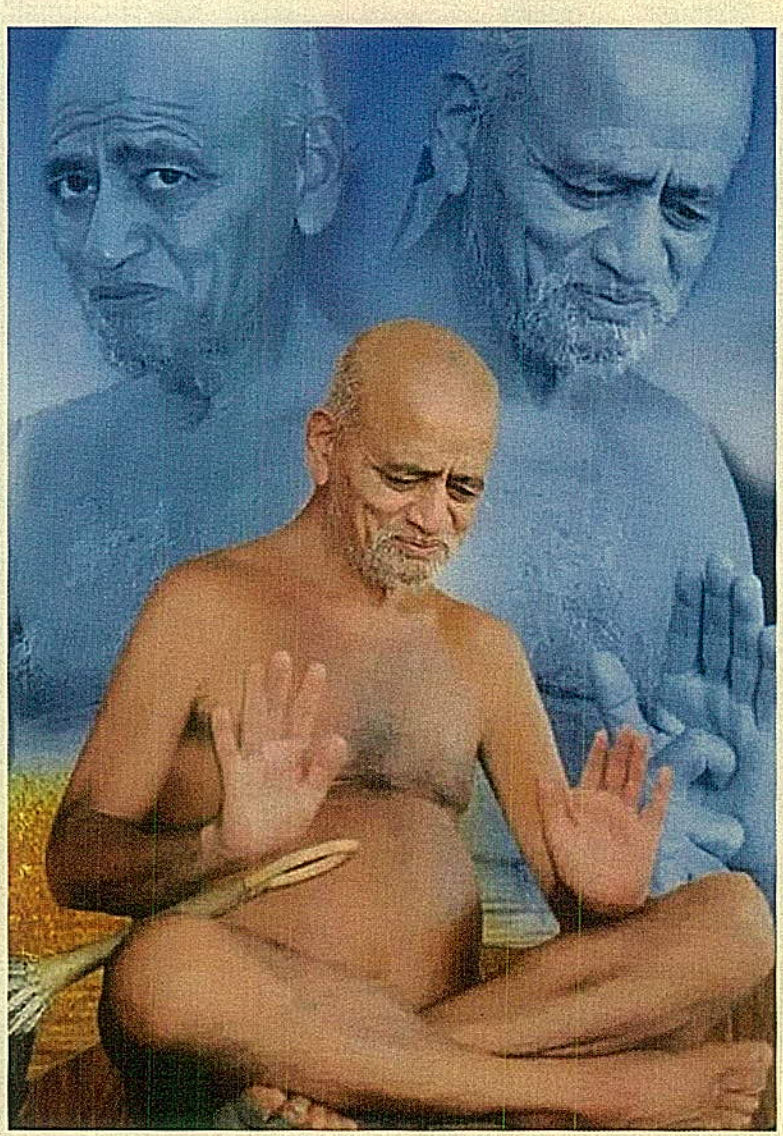

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज न केवल श्रमण संस्कृति के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं बल्कि पूरी भारतीय संस्कृति को उन्होंने अपनी साधना के बल गौरवान्वित किया है। अध्यात्म सरोवर के राजहंस, सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र के महानद, साधना के सुमेरू, भारतीय संस्कृति के अवतार, संत शिरोमणि महाकवि आचार्य श्रष्ठ विद्यासागर जी महाराज दिगम्बर जैन परंपरा के ऐसे महान संत हैं, जो सही मायने में साधना, ज्ञान, ध्यान व तपस्यारत होकर आत्मकल्याण के मार्ग पर सतत अग्रसर हैं। वे पंचमकाल में चतुर्थकाल सम संत हैं। महाप्रज्ञ आचार्यश्री की तपस्तेज सम्पन्न एवं प्रसन्न मुख मुद्रा प्रायः सभी का मन मोह लेती है। आचार्यश्री के कंठ में भी अपने गुरू के समान ही सरस्वती का अनुपम निवास है। आचार्यश्री की पावन वाणी सत्यं, शिवं सुन्दरं की विराट अभिव्यक्ति तथा मुक्ति द्वार खोलने में सर्वथा सक्षम है। उन्होंने अपनी अनवरत साधना से जीवन की कलात्मकता को भारतीय संस्कृति के अनुरूप अभिव्यक्त किया है। परंपरागत धार्मिक व सांस्कृतिक धारणाओं में व्याप्त कुरीतियों एवं विघटन को समझकर वे उन्हें हटा देने को व्याकुल हैं। इसीलिए धर्म की वैज्ञानिक, सहज, सरल व्याख्या आचार्यश्री ने उपलब्ध कराई है।

कलयुग में भी यह सतयुग,
गुरूवर के नाम से जाना जाएगा।
कभी महावीर की श्रेणी में,
गुरूवर का नंबर आयेगा।।

वर्तमान युग के महार आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का 50वां मुनिदीक्षा दिवस सम्पूर्ण देश सम्पूर्ण देश संयम स्वर्ण महामहोत्सव वर्श के रूप में विविध आयोजनों के साथ मना रहा है। यह हम सब का परम अहोभाग्य, परम सौभाग्य है कि हमें ऐसे महान आचार्यश्री का संयम स्वर्ण महोत्सव मनाने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है।

आचार्यश्री के संयम स्वर्ण महोत्सव वर्श के पा प्रसंग के विराट बेमिशाल और अद्भुत महनीय अर्चनीय व्यक्तित्व पर एक संक्षिप्त दृश्टि :

दिग्गज राजनेता आचार्यश्री के चरणों में : आज जहां तथाकथित बाबाओं के प्रकरणों के कारण संत समाज को कटघरे में खड़ा किया जा रहा है वहीं हमारे पूज्य आचार्यश्री अपनी त्याग, तपस्या और साधना से पूरे विश्व को बता रहे हैं कि आज भी सच्चे संतों की कमी नहीं है। आज संतो के सम्मान को बचाने में आचार्यश्री का नाममात्र ही काफी है। यही वजह है के देश की राजनीति के धुरंधर आचार्यश्री के चरणों में आकर अपने आपको धन्य महसूस करते हैं। उनका दर्शन पाकर वे अपने जीवन को सार्थक मानते हैं। वर्ष 1999 में

गोम्मटगिरी, इंदौर में देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी जी बाजपेयी जब वर्तमान लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन के साथ पहुंचे थे तो आचार्यश्री के दर्शन पाकर गदगद हो उठे थे। देश के पहले नागरिक राष्ट्रपति महामहिम श्री रामनाथ कोंविद तो जब राज्यपाल थे तब भी दर्शनार्थ गये थे और राष्ट्रपति बनने के बाद भी। पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत भी आचार्यश्री के प्रति बहुत ही आस्था रखते थे। देश के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी 2016 में भोपाल चातुर्मास के समय आचार्यश्री से आशीर्वाद ग्रहण करने पहुंचे थे। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय शिवराज सिंह चौहान तो आचार्यश्री के विराट व्यक्तित्व से बहुत ही प्रभावित रहते हैं यही वजह है कि जब–तब वह आचार्यश्री के चरणों में पहुंचते रहते हैं। उन्होंने आचार्यश्री का प्रवचन भी विधानसभा में कराया जो उनकी आचार्यश्री के प्रति आस्था को दर्शाता है। इसके अलावा छत्तीसगढ के मुख्यमंत्री रमनसिंह जी, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह जी, पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह जी, उमाभारतीजी अनेक केन्द्रीय मंत्री, मुख्यमंत्री, राज्यपाल, राज्य मंत्री , सांसद, विधायक आचार्यश्री के चरणों में पहुंचकर आशीर्वाद और मार्गदर्शन लेते रहते हैं। योगगुरू बाबा रामदेव जी, आरएसएस के मोहन भागवत जी आदि अनेक हस्तियां आचार्यश्री से आशीर्वाद ग्रहण कर चुकी हैं।

बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ अभियान को गति दे रहे हैं आचार्यश्री : इन दिनों भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ अभियान की खूब चर्चा है। आचार्यश्री का इस अभियान को सफल बनाने में जो अवदान है वह भुलाया नहीं जा सकता है। आचार्यश्री की प्रेरणा से बेटियों की शिक्षा को शिखर पर ले जाने के उद्देश्य से बालिकाओं की शिक्षा के लिए प्रतिभास्थली का निर्माण देश के विभिन्न स्थानों पर किया गया है और यह कार्य निरंतर जारी भी है। बेटियां प्रतिभास्थली में पढ़कर के अपनी प्रतिभा को निखार रही हैं और संस्कारों से युक्त शिक्षा पा रही हैं। आचार्यश्री का सपना है कि बेटियों की शिक्षा के लिए और लड़कों की शिक्षा के लिए अलग–अलग शिक्षा केन्द्र हों, उसी उद्देश्य को लेकर आज छत्तीसगढ के डोंगरगढ़, महाराष्ट्र के रामटेक, मध्यप्रदेश के जबलपुर, इंदौर और अतिशय क्षेत्र पपौरा जी में प्रतिभास्थली संचालित की गई हैं। इन प्रतिभास्थलियों पर आचार्यश्री का सपना साकार होते देखा जा सकता है। यह समाज की नहीं देश के लिए मील का पत्थर साबित होंगी।

गोशालाओं की स्थापना से जीवदया का संदेश हुआ मुखर : कृषि प्रधान अहिंसक देश में गौवंश आदि पशुधन को नष्ट कर मांस निर्यात किया जा रहा है, ऐसी स्थिति में आचार्यश्री ने हिंसा के ताण्डव के बीच अहिंसा का शंखनाद किया। आचार्यश्री की पावन प्रेरणा से देशभर में शताधिक गौशालाएं चल रही हैं, जिनमें उन बेजुबान पशुओं को आश्रय देकर उनकी रक्षा की जा रही है। आचार्यश्री हमेशा अपने प्रवचनों में कहते हैं कि गौधन की रक्षा हो तभी हमारा देश सुरक्षित रहेगा।

हथकरघा से स्वदेश प्रेम की भावना का उद्घोश : आचार्यश्री हमेशा स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग की प्रेरणा देते हैं। हथकरघा उनकी इस भावना को साकार रूप कर रहा है। आज अनेक स्थानों पर हथकरघा उद्योग स्थापित हो चुका है। इसमें अनेक त्यागीव्रती भी अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं देने में संलग्न हैं। हथकरघा से जहां स्वदेश प्रेम की भावना को बल मिल रहा है वहीं सैकड़ों लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा रहा है। जेलों में कैदी भी इस कार्य को बड़ी ही रूचि पूर्वक कर रहे हैं। गरीबों की आजीविका हथकरघा केन्द्र बन रहे हैं। यह महत्वपूर्ण कार्य बड़ी ही तेजी से आगे बढ रहा है।

तीर्थों के उद्धारक : आचार्यश्री की प्रेरणा से अनेक तीर्थक्षेत्रों का निर्माण हुआ है। अनेक क्षेत्रों का कायाकल्प हुआ है। छत्तीसगढ के अमरकंटक में सर्वोदय तीर्थक्षेत्र, चंद्रगिरी डोंगरगढ़, भाग्योदय सागर, दयोदय तीर्थ जबलपुर, सिद्धोदय तीर्थ नेमावर आदि तीर्थस्थल हैं इनके अतिरिक्त तीर्थक्षेत्रों पर आचार्यश्री के आशीर्वाद से जीर्णोद्धार के कार्य होने से उन क्षेत्रों का कायाकल्प होते हुए देखा जा सकता है।

महापुरूष के विशाल कृतित्व से भारतीय साहित्य हुआ समृद्ध : आज तक के इतिहास में किसी भी संस्कृत के विद्वान ने पांच शतक से ज्यादा संस्कृत भाषा में नहीं लिखे हैं किंतु आचार्यश्री ने अपनी लेखनी से संस्कृत भाषा में छह शतक लिख एक नूतन इतिहास की संरचना की है। आपने ज्ञान, ध्यान, तप

के यक्ष में अपने आपको ऐसा आहूत किया कि अल्पकाल में ही प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिंदी, अंग्रेजी, मराठी, कन्नड भाषा के मर्मज्ञ साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध हो गये। आपने प्राचीन जैनाचार्यों के 25 प्राकृत–संस्कृत ग्रंथों का हिंदी भाषा में पद्यानुवाद कर पाठकों को समरसता प्रदान की है। आपके द्वारा रचित हिन्दी भाषा में लघु कविताओं के चार संग्रह ग्रंथ– नर्मदा का नरम कंकर, तोता क्यों रोता , डूबोमत लगाओ डुबकी, चेतना के गहरा में, ये कृतियां साहित्य जगत् में काव्य सुषमा को विस्तारित कर रही हैं।

कालजयी कृति मूकमाटी : आचार्यश्री की रचना मूकमाटी उत्कृष्ट काव्य कृति है। यह महाकाव्य है। 'विद्वानों का मानना है कि भवानी प्रसाद मिश्र की सपाट बयानी, अज्ञेय का शब्द विन्यास, निराला की छान्दसिक छटा, पंत का प्रकृति व्यवहार, महादेवी की मसृण गीतात्मकता, नागार्जुन का लोक स्पन्दन, केदारनाथ अग्रवाल की बतकही वृत्ति, मुक्तिबोध की फैंटेसी संरचना और धूमिल की तुक संगति आधुनिक काव्य में एक साथ देखनी हो तो वह 'मूकमाटी' में देखी जा सकती है।' इस महाकाव्य पर अनेकों स्वतंत्र आलोचनात्मक ग्रंथों के अतिरिक्त 4 डी लिट, 22 से अधिक पीएचडी, 7 एम. फिल के शोध प्रबंध तथा 2 एमएड और 6 एमए के लघु शोध प्रबंध लिखे जा चुके हैं। हाल ही में मध्यप्रदेश के पाठ्यक्रम में इसके कुछ अंश को शामिल करने का निर्णय भी लिया गया है। इस महाकाव्य पर निरंतर शोधकार्य और लेखन अनवरत रूप से जारी है। इस कृति ने भारतीय साहित्य भंडार को गौरव प्रदान करते हुए जो समृद्धता प्रदान की है वह अकल्पनीय है।

चेतनकृतियों के निर्माता : आचार्यश्री के दिव्य तेजोमय आभा मंडल के प्रभाव से उच्च शिक्षित युवा, युवतियां जवानी की दहलीज पर आपके श्री चरणों में सर्वस्व समर्पित बैठे। संस्कार सागर के जून 2018 अंक में प्रकाशित विवरण के अनुसार आचार्यश्री ने अब तक 120 मुनि दीक्षायें प्रदान की हैं। आचार्यश्री से दीक्षा लेने वाले 7 राज्यों के साधकगण हैं, जिनमें कर्नाकट के 9 मुनिराज, महाराष्ट्र के 15, गुजरात के 3, उत्तरप्रदेश के 9, राजस्थान के 2, झारखण्ड के 1 और मध्यप्रदेश के 81 मुनिराज हैं। आचार्यश्री ने अब तक 172 आर्यिकाओं को दीक्षा प्रदान की है। जिनमें मध्यप्रदेश की सर्वाधिक 146 आर्यिकायें हैं।

120 मुनि, 172 आर्यिकायें, 57 ऐलक, 64 क्षुल्लक, 3 क्षुल्लिका, कुल मिलाकर 415 दीक्षाएं प्रदान की हैं। आचार्यश्री की इन चेतन कृतियों ने जो त्याग, तपस्या और साधना की छटा बिखेरी है। **आचार्यश्री पचास हजार किलोमीटर से ज्यादा पदयात्रा कर अनेक राज्यों में धर्मप्रभावना का झण्डा बुलंद कर चुके हैं।**

हाइकू का आध्यात्मिक सौंदर्य : आचार्यश्री की जापानी भाषा की कविता हाइकू पर रचनाएं बड़ी ही रोचक और ग्रहणीय प्रेरणादायी हैं। हाइकू जापानी छंद की कविता है। इसमें पहली पंक्ति में 5 अक्षर हैं, दूसरी पंक्ति में 7 अक्षर हैं, तीसरी पंक्ति में 5 अक्षर हैं। महाकवि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने लगभग 500 हाइकू लिखे हैं। आचार्यश्री की हाइकू अन्य रचनाकारों की हाइकू से बिल्कुल पृथक नजर आती हैं, जिसका बहुत बड़ा कारण है संयममय जीवन। उनकी अनुभूतियों से निषपन्न जापानी छंद हाइकू की ये रचनाएं उन्हें विश्व के विशाल पटल पर स्थापित करती हैं।

इण्डिया नहीं भारत बोलो : परम पूज्य आचार्यश्री का कहना कि भारत को इंडिया नहीं कहना चाहिए, भारत कहना चाहिए। इण्डिया का कोई मतलब नहीं है। यह अर्थहीन नाम है। जबकि भारत नाम एक परंपरा का है, यह एक संस्कृति का नाम है। भारतीय देश के लिए अंग्रेजी नाम का इस्तेमाल होना दुर्भाग्यपूर्ण है। भारत शब्द में एक ताकत है। इस देश के हर व्यक्ति का दिल इस शक्ति से गूंजना चाहिए। आचार्यश्री का कहना है कि भारत का नाम पहले भी था, अभी भी है और आगे भी रहेगा। भारत को इंडिया कहने वाले इसकी संस्कृति से अनभिज्ञ हैं। हम सभी को अपने देश का नाम भारत के नाम से सम्बोधित करना चाहिए। इंडिया हटाओ, भारत बचाओ। आचार्यश्री के इस अभियान को लोगों ने हाथोहाथ लिया है और लाखों लोग भारत का प्रयोग करने लगे हैं।

पंचमकाल का आश्चर्य है उनकी कठोर– चर्या : वर्तमान

समय में आचार्यश्री का संघ सम्पूर्ण देश का सबसे बड़ा दिगम्बर जैन साधु संघ है, संघ में संघ के नाम का कोई वाहन आदि नजर नहीं आता। टीवी, मोबाइल, लैपटॉप आदि आधुनिक सुविधा साधु के कमरे में नहीं दिखती। संघ में सभी संत, साधु शिक्षित, संस्कारी, बाल बह्मचारी हैं। धर्म चर्चा में ही अपना समय लगाते हैं। विहार के समय भक्तगण बड़ी संख्या में मार्ग में चौका लगाकर आहारदान देते हैं और पुण्य लाभ लेकर साथ–साथ हजारों का जनसैलाब चलता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इनके संघ में संघपति की तो बात दूर है, कोई भी निजी चौका लेकर साथ नहीं चलता, चौका कितना आसान मात्र दाल–फुलका, न सब्जी, न फल, न घी, क्या लिखें, क्या न लिखें? जहां–जहां संघ का प्रवास होता है, वहां–वहां सैकड़ों की संख्या में लोग चौका लगाने उमड़ पड़ते हैं। आचार्यश्री के संघ में सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय आदि सभी क्रियाओं का समय निर्धारित है। सभी समय से सारी क्रियाएं संपादित करते हैं। चाहे कितनी ही तेज गर्मी हो या कितनी ही कड़कड़ाती ठंड, संघ के किसी साधु के कमरे में कूलर, एसी, हीटर देखने को नहीं मिलते। न पंखे का उपयोग करते, न ही मच्छर भगाने वाले किसी ऑयल या कायल का उपयोग करते, धन्य है ऐसी साधना। किसी तरह के तंत्र, मंत्र, ताबीज आदि की क्रियाओं से आचार्यश्री का संघ अछूता है। पूरा संघ एक ही आचार्य के अनुशासन में चलता है। संघ में दीक्षा गहन स्वाध्याय, साधना, त्याग आदि के बाद दी जाती है ताकि श्रमणाचार का पालन निर्दोष कर सकें। आचार्यश्री स्वयं बाल ब्रह्मचारी हैं तथा उनका पूरा संघ भी बाल ब्रह्मचारी है, जो इस पंचमकाल में किसी आश्चर्य से कम नहीं है। सही मायनों में अतिथि तो आचार्यश्री ही हैं। किसी को पता नहीं होता कि आचार्यश्री का पग विहार किस ओर होगा। सभी बस अपना–अपना गणित लगाते हैं।

जब तक सृष्टि के अधरों पर , करूणा का पैगाम रहेगा।
तब तक युग की हर धड़कन में, विद्यासागर का नाम रहेगा।।

आचार्यश्री को पाकर लगता है न जाने कितने जन्मों का पुण्य आज फलित हो रहा है। आचार्यश्री चलते फिरते तीर्थ हैं। उनके तेज दमकते हुए आभामंडल और मुस्कान को देखकर हजारों लोगों के दुख दूर हो जाते हैं। आचार्यश्री के दर्शन जो भी करता है वह धन्य हो जाता है। उनकी दिव्य देशना में जो अमृतवाणी झरती है उसे पान कर हजारों लोगों की प्यास बुझती है। आचार्यश्री की हर चर्या अतिशय–सी दिखती है। उनकी मंगल वाणी खिरते समय जो शांति का अमृत बरसता है, चारों ओर एक अजीब–सा सन्नाटा, मात्र आचार्यश्री की वाणी अनुगूंज सुनायी देती है। सचमुच अद्भुत और निराले संत हैं आचार्यश्री।

आचार्यश्री के सपने को साकार करने में हजारों–लाखों युवा लगे हुए हैं, हम सब मिलकर आचार्यश्री के इस संयम स्वर्ण महामहोत्सव वर्ष के अवसर पर अपने गुरूदेव के सपनों को साकार करने में अपनी भूमिका को ईमानदारी से निभायें, तभी हम सबका संयम स्वर्ण महोत्सव वर्ष मनाना सार्थक होगा। किसी कवि की यह पंक्तियां आचार्यश्री विराटता को व्यक्त करती हैं–

कुन्दकुन्द के समयसार का सार हमें जो बता रहे,
समन्तभद्र का डंका घर–घर, द्वार–द्वार बजा रहे।
भोले–भाले अनाथ जन के जो हैं पावन धाम, ऐसे
विद्यासागर गुरूवर को हमारा शत–शत प्रणाम।।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य प्रवीन कुमार जैन ऋषभांचल पुरस्कार से सम्मानित

जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में अग्रणी, श्रमण और श्रावक संस्कृति के संवर्धन में नित कार्यरत, निर्भीक लेखनी के लिये प्रसिद्ध, दिल्ली ही नहीं पूरे भारतवर्ष की जैन पत्र-पत्रिकाओं में सुंदर, आकर्षक, कलरफुल मुद्रण के लिये लोकप्रिय प्रकाशन सान्ध्य महालक्ष्मी, दिल्ली के सिटी सम्पादक श्री प्रवीन कुमार जैन का ऋषभांचल के स्थापना दिवस के अवसर पर 26 मई 2018 को परम श्रद्धेय बाल ब्रह्मचारिणी मां श्री कौशल जी के वात्सल्य पूर्ण सान्निध्य एवं दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री श्री सतेन्द्र जैन के करकमलों द्वारा पत्रकारिता हेतु ऋषभांचल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रवीन कुमार जैन भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सम्माननीय सदस्य भी हैं।

आचार्य विद्यासागर जी महाराज का जीवन जन जन के मन का प्रेरणा स्त्रोत बन गया

- उमेश जैन (नैकोरा)

आचार्य विद्यासागर जी को देश-दुनिया के लोग जानते हैं उनके संघर्ष और तप से पूरी दुनिया प्रभावित है भारत-भू पर अनेक महापुरुष और संत कवि जन्म ले चुके हैं उनकी साधना और कथनी-करनी की एकता ने सारे विश्व को ज्ञान रूपी आलोक से आलोकित किया है इन अपने जीवनानुभव की वाणी से त्रस्त और विघटित समाज को एक नवीन संबल प्रदान किया है।

आचार्य विद्यासागर जी का जन्म 10 अक्टूबर 1946 शरद पूर्णिमा को कर्नाटक के बेलगांव जिले के सदलगा ग्राम में हुआ था उनके पिता मल्लप्पा व मां श्री मती ने उनका नाम उनका नाम विद्याधर रखा कन्नड़ भाषा में हाईस्कूल तक अध्ययन करने के बाद विद्याधर ने 1967 में आचार्य देशभूषण जी महाराज से ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया इसके बाद जो कठिन साधना का दौर शुरू हुआ तो आचार्य श्री ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा धार्मिक विचारों से ओतप्रोत संवेदनशील सद्गृहस्थ मल्लपा जी नित्य जिनेन्द्र दर्शन एवं पूजन के पश्चात ही भोजनादि आवश्यक करते थे साधु-सत्संगति करने से परिवार में संयम अनुशासन रीति-नीति की चर्या का ही परिपालन होता था।

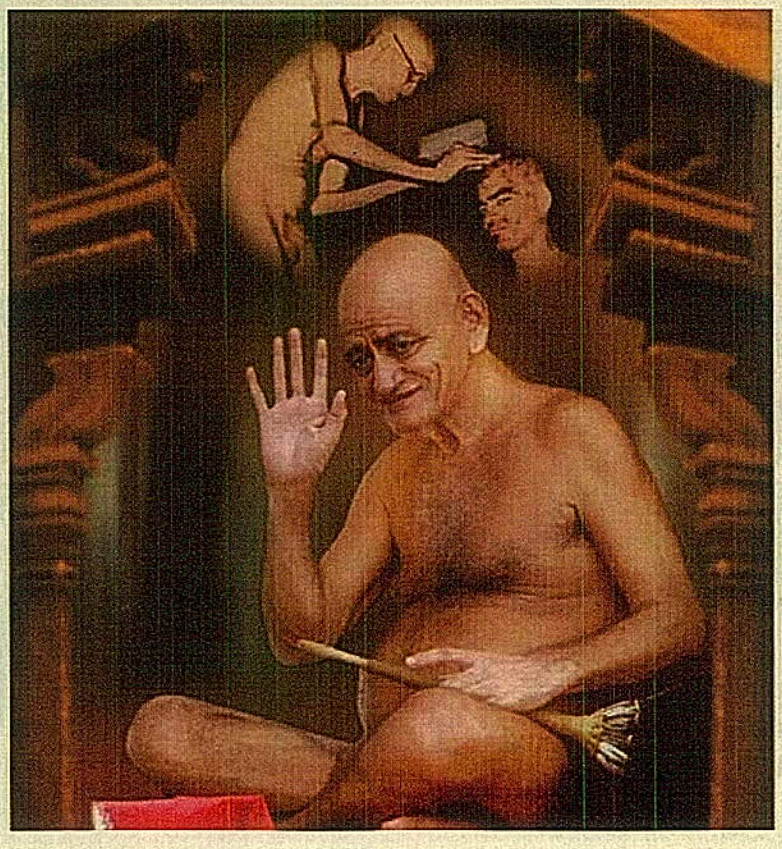

आप माता-पिता की द्वितीय संतान होकर भी अद्वितीय संतान है बड़े भाई श्री महावीर प्रसाद स्वस्थ परम्परा का निर्वहन करते हुए सात्विक पूर्वक सद्गृहस्थ जीवन-यापन कर रहे हैं माता-पिता दो छोटे भाई अनंतनाथ तथा शांतिनाथ एवं बहिनें शांता व सुवर्णा भी आपसे प्रेरणा पाकर घर-गृहस्थी के जंजाल से मुक्त हो कर जीवन-कल्याण हेतु जैनेश्वरी दीक्षा ले कर आत्म-साधनातर हुए धन्य है वह परिवार जिसमें सात सदस्य सांसारिक प्रपंचों को छोड़कर मुक्ति-मार्ग पर चल रहे हैं इतिहास में ऐसी अनोखी घटना का उदाहरण बिरले ही दिखता है।

विद्याधर का बाल्यकाल घर तथा गाँव वालों के मन को जीतने वाली आश्चर्यकारी घटनाओं से युक्त रहा है खेलकूद के स्थान पर स्वयं या माता-पिता के साथ मन्दिर जाना धर्म-प्रवचन सुनना शुद्ध सात्विक आहार करना मुनि आज्ञा से संस्कृत के कठिन सूत्र एवं पदों को कंठस्थ करना आदि अनेक घटनाएँ मानो भविष्य में आध्यात्म मार्ग पर चलने का संकेत दे रही थी। आप पढाई हो या गृहकार्य सभी को अनुशासित और क्रमबद्ध तौर पर पूर्ण करते बचपन से ही मुनि-चर्या को देखने उसे स्वयं आचरित करने की भावना से ही बावडी में स्नान के साथ पानी में तैरने के बहाने आसन और ध्यानलगाना मन्दिर में विराजित मूर्ति के दर्शन के समय उसमें छिपी विराटता को जानने का प्रयास करना बिच्छू के काटने परभी असीम दर्द को हँसते हुए पी जाना परंतु धार्मिक-चर्या में अंतर ना आने देना उनके संकल्पवान पथ पर आगे बढ़ने के संकेत थे बाल्यकाल में खेलकूद में शतरंज खेलना शिक्षाप्रद फिल्में देखना मन्दिर के प्रति आस्था रखना गिल्ली-डंडा खेलना महापुरुषों और शहीद पुरुषों के तैलचित बनाना आदि रुचियाँ आपमें विद्यमान थी।

ब्रह्मचर्यव्रत धारण क प्रस्फुटित हुआ 20 वर्ष की उम्र जा की खाने-पीने भोगोपभोग या संसारिक आनन्द प्राप्त करने की होती है आप साधु-सत्संगति की भावना को हृदय में धारण कर आचार्य श्री देशभूषण महाराज के पास जयपुर (राज.) पहुँच वहाँ अब ब्रह्मचारी विद्याधर उपसर्ग और परीषहों को जीतकर ज्ञान तपस्या और सेवा का पिण्ड प्रतीक बनकर जन-जन के मन का प्रेरणा स्त्रोत बन गया था।

आप संसार की असारता जीवन के रहस्य और साधना . महत्व को पहचान गये थे। तभी तो हृष्ट-पुष्ट युवा विद्याधर की निष्ठा दृढता और अडिगता के सामने मोह माया श्रृंगार आदि घुटने टेक चुके थे वैराग्य भावना ददृढवती हो चली पदयात्री और करपात्री बनने की भावना से आप गुरुवर श्री ज्ञानसागर जी महाराज के पास मदनगंज किशनगढ़ (अजमेर) राजस्थान पहुँचे गुरुवर के निकट सम्पर्क में रहकर लगभग 1 वर्ष तक कठोर साधना से परिपक्व होकर मुनिवर श्री ज्ञानसागर जी महाराज के द्वारा राजस्थान की ऐतिहासिक नगरी अजमेर में आषाढ शुक्ल पंचमी वि. सं. 2025 रविवार 30 जून 1968 ईस्वी को लगभग 22 वर्ष की उम्र में सन्यम का परिपालन हेतु आपने पिच्छि-कमन्डलु धारण कर संसार की समस्त बाह्य वस्तुओं का परित्याग कर दिया पूज्य मुनि श्री विद्यासागर महाराज अब धरती ही बिछौना आकाश ही उडौना और दिशाएँ ही वस्त्र बन गये थे दीक्षा के उपरांत गुरुवर श्री ज्ञानसागर जी

महाराज की सेवा सुश्रुषा करते हुए आपकी साधना उत्तरोत्तर विकसित होती गयी तब से आज तक अपने प्रति वज्र से कठोर परंतु दूसरों के प्रति नवनीत से भी मृदु बनकर शीत-ताप एवं वर्षा के गहन झंझावती में भी आप साधना हेतु अरुक-अथक रूप में प्रवर्तमान है श्रम और अनुशासन विनय और संयम तप और त्याग की अग्नि में तपी आपकी साधना गुरुआज्ञा पालन सबके प्रति समता की दृष्टि एवं समस्त जीव कल्याण की भावना सतत प्रवाहित होती रहती है।

गुरुवर आचार्य श्री ज्ञानसागर जी की वृद्धावस्था किंतु सल्लेखना के पहले गुरुवर्य ज्ञानसागर जी महाराज ने आचार्य-पद का त्याग आवश्यक जान कर आपने आचार्य पद मुनि विद्यासागर को देने की इच्छा जाहिर की परंतु आप इस गुरुतर भार को धारण करने किसी भी हालत में तैयार नहीं हुए तब आचार्य ज्ञानसागर जी ने सम्बोधित कर कहा के साधक को अंत समय में सभी पद का परित्याग आवश्यक माना गया है इस समय शरीर की ऐसी अवस्था नहीं है कि मैं अन्यत्र जा कर सल्लेखना धारण कर सकूँ तुम्हें आज गुरु दक्षिणा अर्पण करनी होगी और उसी के प्रतिफल स्वरुप यह पदग्रहण करना होगा गुरु-दक्षिणा की बात सुनकर मुनि विद्यासागर निरुत्तर हो गये तब धन्य हुई नसीराबाद (अजमेर) राजस्थान की वह घडी जब मगसिर कृष्ण द्वितीय संवत 2029 बुधवार 22 नवम्बर 1972 ईस्वी को आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने अपने कर कमलों आचार्य पद पर मुनि श्री विद्यासगार महारा को संस्कारित कर विराजमान किया।

कठिन तपस्या:- ठंड बरसात और गर्मी से विचलित हुए बिना आचार्य श्री ने कठिन तप किया उनका त्याग और तपोबल आज किसी से छिपा नहीं है इसी तपोबल के कारण सारी दुनिया उनके आगे नतमस्तक है, 50 वर्ष से वे एक महान साधक की भूमिका में हैं उनके बताए गए रास्ते पर चलकर हम देश तथा संपूर्ण मानव जाति की भलाई कर सकते हैं।

कई भाषाओं का ज्ञान- आचार्य पद की उपाधि मिलने के बाद आचार्य विद्यासागर ने देश भर में पदयात्रा की चातुर्मास गजरथ महोत्सव के माध्यम से अहिंसा व सद्भाव का संदेश दिया समाज को नई दिशा दी आचार्य श्री संस्कृत व प्राकृत भाषा के साथ हिन्दी मराठी और कन्नड़ भाषा का भी विशेष ज्ञान रखते हैं। उन्होंने हिन्दी और संस्कृत में कई रचनाएं भी लिखी हैं इतना ही नहीं पीएचडी व मास्टर डिग्री के कई शोधार्थियों ने उनके कार्य में निरंजना शतक भावना शतक परीशाह जाया शतक सुनीति शतक और शरमाना शतक पर अध्ययन व शोध किया है।

आचार्य 108 श्री विद्यासागर जी महाराज के संयम स्वर्णिम महोत्सव वर्ष के समापन पर हुआ वृक्षारोपण
जैन टीचर्स एसोसिएशन ग्रुप ने आयोजित किया कार्यक्रम
वृक्ष हमारे जीवन साथी की तरह हैं– राज्यमंत्री मनोहर पंथ

(ललितपुर) जैन जगत के श्रेष्ठ आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के 50 वें संयम स्वर्ण महोत्सव वर्ष के समापन पर सम्पूर्ण भारत में 51000 वृक्षारोपण का अभियान चलाया जा रहा है। इसी श्रंखला में ललितपुर नगर के जैन टीचर्स सोशल एसोशिएशन ग्रुप के तत्वावधान में मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के श्रम एवं सेवायोजन राज्य मंत्री मनोहर लाल पंथ के कर कमलों से सर्वोदय गौ संवर्धन केंद्र गौशाला में वृक्षारोपण किया गया। कार्यक्रम के पूर्व एक वैचारिक गोष्ठी भी आयोजित की गई। जिसमें मंगलाचरण गरिमा जैन एवं मोनिका जैन ने किया। तत्पश्चात आचार्य श्रेष्ठ के चित्र का अनावरण मुख्य अतिथि मनोहर लाल पंथ,प्रमोद बडौनियां पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष,डां०अक्षय टडैया महामंत्री पंचायत समिति ललितपुर, गौशाला निर्देशक ज्ञानचंद इमलिया ने संयुक्त रूप से किया। गोष्ठी को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि आचार्य श्रेष्ठ के दर्शन मात्र से ही हमारे जन्म जन्म के कर्मों के बंधन नष्ट हो जाते हैं। हमारा सौभाग्य है कि हमने आचार्य श्रेष्ठ के युग में जन्म लिया है। हम अपने लिए गौरान्वित करते हैं। उन्होंने कहा कि वृक्ष हमारे जीवन साथी की तरह हैं। एक वृक्ष लगाने से वह हमें जीवनभर छाया व फल देता है। वृक्ष हमारा वातावरण भी स्वच्छ रखते है। कार्यक्रम का संचालन डां० सुनील जैन संचय ने किया। आभार जैन पंचायत के महामंत्री डां०अक्षय जैन टडैया ने किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में संतोष जैन इमलिया गौशाला अध्यक्ष, प्रदीप सतरवास, सत्येंद्र जैन गदयाना, जितेंद्र जैन राजू, सतीश नजा, अंतिम जैन, प्रफुल्ल जैन, सुशील जैन, पुष्पेंद्र जैन, अमित जैन, आदेश जैन, सचिन जैन ,मनीषा, दीप्ति जैन, डां०सुनील संचय, अभिषेक जैन, सौरभ जैन सीए, अभिषेक मुच्छाल, मनोज पंचमनगर, रीतेश जैन, अभिषेक अनौरा, देवेन्द्र देव, प्निल वरया, प्रतीक जैन आदि मौजूद रहे।

– डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

प. पू. संत शिरोमणि आचार्य 108 श्री विद्यासागर जी महाराज की संयम स्वर्ण जयंती महोत्सव के शुभावसर पर शत्-शत् नमन

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार

जैन श्रमण संस्कृतीचा वारसा श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ दिगंबर जैन सिद्धातिशय क्षेत्र कुंडल जि. सांगली (महाराष्ट्र)

- विद्याचंद्र मोतीचंद शहा

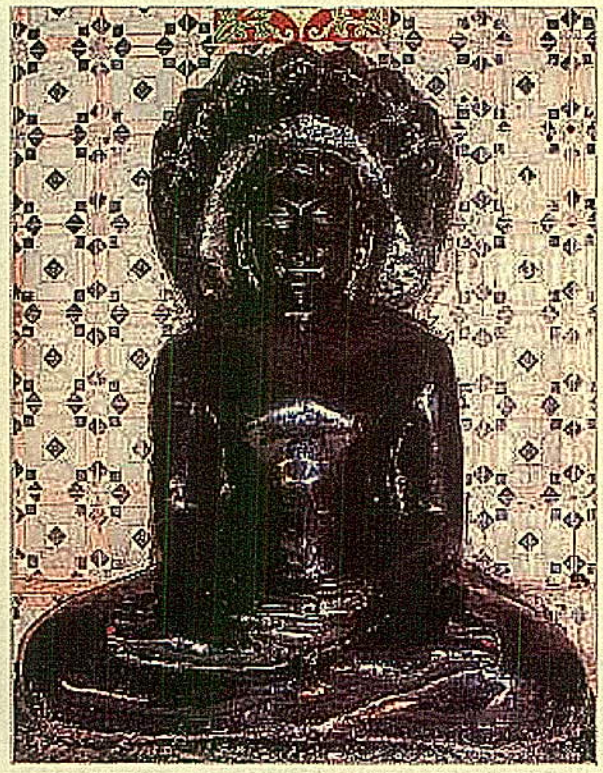

श्री बाबुराव भरमा मगदुम रा. वाळवा जि.सांगली यांनी प्रसिद्ध केलेल्या तिर्थराज कुंडल या पुस्तकेतील संदर्भान्वये दक्षिण भारतात जी जैन तिर्थक्षेत्र आहेत त्यात कुंडल हे एक पवित्र सिद्ध क्षेत्र आहे. अनेक प्राचीन आचार्यांनी या तिर्थाला वंदन केले आहे. यति वृषभाचार्यांनी आपल्या तिलोय पण्णत्ती (त्रिलोक प्रज्ञाप्ति) ग्रंथात श्लोक 147 मध्य म्हटले आहे.

श्लोक वुंडल गिरिम्मि चरिमो केवलणाणीसु सिरिधरो सिद्धो

श्रीधर स्वामी हे कुंडलगिरीवर शेवटचे केवलज्ञानी झाले व त्याच ठिकाणी सिद्ध झाले मुक्त झाले निर्णण झाले. जैन संस्कृतीत प्राचीन कालापासुन कुंडल सिद्धक्षेत्र पवित्र, मंगल मानले आहे. प्रभावशाली पुण्य पुरुषाच्या तिर्थंकराच्या, मुनीच्या निर्वाणस्थानास तिर्थ म्हणतात. निर्वाणभुमी ही दु:खी जनांना अध्यात्मिक निरोगिता प्राप्त करणेस मदत करते. तेथील वातावरण आनंदमय असते. सम्यकत्वाच्या भावशुद्धीसाठी तिर्थयात्रेची आवश्यकता असते.

दक्षिण महाराष्ट्रातील जैना तिर्थक्षेत्रापैकी सांगली जिल्हयातील कुंडल हे प्राचीन तिर्थक्षेत्र आहे. शस्त्र तसेच शास्त्र यासाठी प्रख्यात करहाटक (कराहड) शी संबंधीत कुंडल या गावचे प्राचीन नाव कॉडीन्यपूर असे होते. कुंडलनिवासी श्री यशवतंत गोविंद लाड घर नं. 1472 व त्यांचे चुलत बंधू श्री दत्तात्रय सखाराम लाड घर नं. 1473 चे घराच्या भिंतीचे बांधकाम करीत असताना प्राप्त झालेल्या 3 ताम्रपटाचे वाचन इतिहास संशोधक डॉ. ग.ह. खरे यांनी केले असून ते दिनांक 3 एप्रील 1955 रोजी रविवार सकाळ मध्य प्रसिद्ध करण्यात आले त्या अनुषंगे क-हाडचे राजे भोपाल व त्यांची राणी नकुलादेवीने संघ तयार केला. चालुक्य राजा विक्रमादित्याने इ.स. 7 व्या शतकामध्ये कुंडल आणि परीसरातील काही गांवे दान स्वरूपात दिली. आचार्य समंतभद्र मुनींनी येथेच अनेक विद्वानांना धर्मशास्त्रात निरुत्तर केले आहे. जैन धर्मीयांचे 23 वे तिर्थंकर भ. पार्श्वनाथ व 24 वे तीर्थंकर भ. महावीर यांचे समवशरण गिरी पार्श्वनाथ या पहाडावर संपन्न झाले होते.

डॉ. सुभाषचंद्र आक्कोळे जयसिंगपूर यांनी लिखाण केलेल्या आचार्य श्री शांतीसागर चरित्र ग्रंथातील पान नं.48 वर नमुद केले प्रमाणे प.पु. आचार्य श्री शांतीसागर महाराज यांनी गिरनारची यात्रा संपवून पुन्हा दक्षिणेत आले. येता येता पुणे मिरज मार्गावरील कुंडल रे स्टेशनवर महाराज उतरले आणि कुंडल क्षेत्राच्या दर्शनास गेले तेथील पार्श्वप्रभूच्या मूर्तीसमोर यापुढे आपण आजन्म कोणत्याही प्रकारच्या वाहनात बसणार नाही पायीच विहार करु अशी स्वयं प्रतिज्ञा घेतली. व महाराजांची अनवाणी पदयात्रा येथून सुरू झाली. तसेच या सिद्धातिशय क्षेत्रावर प.पू.108 गुरुदेव समंतभद्र महाराजांनी बाहुबली या अतिशय क्षेत्राचा संकल्प केला. वीराचार्य बाबासाहेब कचनुरे यांनीही वीरसेवादलाच्या स्थापनेचा संकल्प याच सिद्धातिशय क्षेत्रावर करुन संपूर्ण महाराष्ट्र व कर्नाटक राज्यात वीरसेवादलाच्या शेकडोंनी शाखा स्थापन केल्या. व युवा पिढीस क्षेत्र संरक्षणार्थ सज्ज केले.

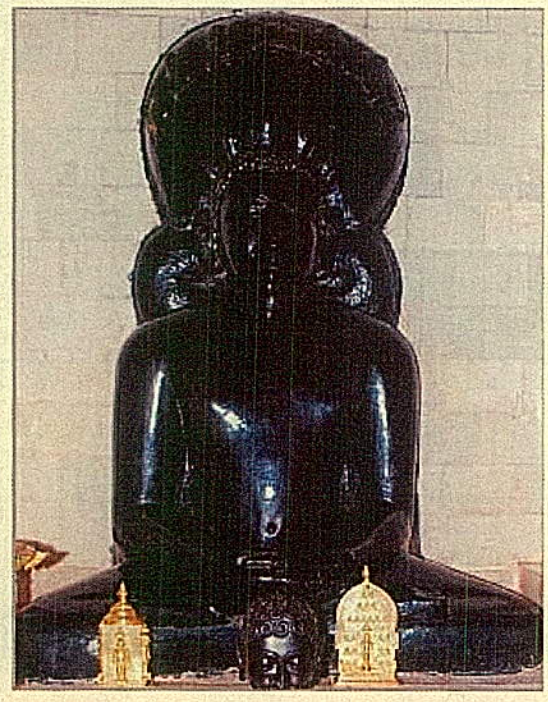

कुंडल या गावामध्ये दक्षिणाभिमुखी 5 फू 4 इंच उंचीची पद्मासन घातलेली वालुमामय कृष्णवर्णीय दिव्य तसेच भव्य अशी अतिशयकारी शिखराधिष्ठीत श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ मुर्ती सिंहासनावर विराजमान आहे. कुंडल या नगरीत सत्येश्वर नावाचा राजा राज्य करीत होता तो कांही आजाराने मरणासन्न अवस्थेत होता. त्याच्या राणीने मंदिराच्या शेजारुन वाहत असलेल्या ओढयातील वाळुपासुन भ, पार्श्वनाथाची मूर्ति तयार करुन त्या मुर्तीची आराधना करुन त्या राजास पुर्ववत जीवन प्राप्त करुन दिले अशी आख्यायिका सांगितली जाते. त्यामुळे या मंदिरात अतिशय संबोधिले जाते.

श्री बाबूराव भरमा मगदुम रा. वाळवा यांनी

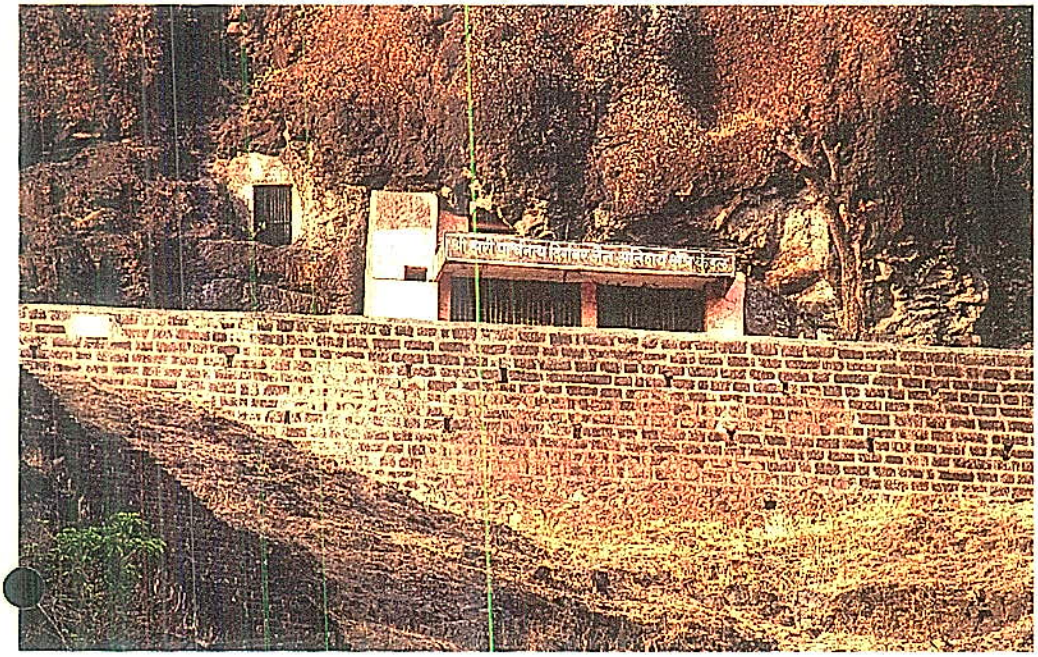

अतिशय परिश्रमपूर्वक प्रसिद्ध केलेल्या श्री तिर्थराज कुंडल या ऐतिहासिक पुस्तकातील नोंदी प्रमाणे कुंडल या नगरीत 108 जिनमंदीरे असावीत पैकी पहाडावर झरी व गिरी अशी दोन मंदिर आहेत. झरी पहाडावरील मंदिरातील पार्श्वनाथ व पद्मावती मातेची मूर्ति नैसर्गीक गुहेत निर्मीत असलेचे दिसून येते. या मुर्तीचे चरणापासून बारमाही पाण्याचा झरा वहात असलेने यास झरी पार्श्वनाथ असे संबोधिले जाते.

झरी पार्श्वनाथ या पहाडाच्या पश्चिमेस उत्तरेकडील बाजूस अंदाजे 2 कि.मी. अंतरावर भव्य पठार आहे. या पठारावर पूर्वाभिमुखी गिरी पार्श्वनाथ मंदिर आहे. याच पठारावर वर नमूद केलेप्रमाणे भ. पार्श्वनाथ व भ. महावीरांचे समवशरण आले होते. व अंतीम श्रुतकेवली श्रीधरमुनी मोक्षमागी झालेले या क्षेत्रास सिद्धातिशय क्षेत्र संबोधले जाते.

कानडी सुप्रभात तिर्थवंदनात स्पष्ट केले आहे. की, कुंडलगिरीयल्ली श्रीधर स्वामी मुक्तरादरु (कानडी) श्लोक 42 अवरिगे वंदिसुतलेळु भव्य बेळगायितु

याचा अर्थ कुंडलगिरीवर श्रीधर स्वामी मुक्त झाले त्यांना वंदन करुया ओवाळुया.

या मुर्तीच्या अभिषेकासाठी पंचक्रोशीतून दु, दही, तुप-ताक, फले, कुंभ इ. अष्टद्रव्ये येत असत. यावरुन त्या त्या गावांना दुधारी-दहयारी-तुपारी-ताकारी-पलूस-कुंभारगांव अशी नांवे प्रचलीत आहेत. या क्षेत्रांची 3 वेळा वंदना केल्यास शिखरजी दर्शनाचा लाभ होतो.

या क्षेत्राच्या देखभालीसाठी कर्मवीर भाऊराव पाटील व स्व. प्रेमचंद सखाराम लेंगरेकर बारामती यांनी सुरुवात केली त्यांचे प्रयत्नातून या क्षेत्राचा कारभार व्यवस्थीत चालावा या दृष्टीकोनातून प. पू. 108 गुरुदेव समंतभद्र मुनीमहाराजांचे आशिर्वादाने स्व. शिवलाल प्रेमचंद लेंगरेकर बारामती यांनी व त्यांच्या सहकार्यांनी 29-12-195 रोजी अधिकृत पूर्ण निर्माण केला.

भविष्याचा वेध घेऊन अतिशय परिणामकारकरित्या हा जैन धर्मियांचा प्राचीन वारसा जतन करणेचे काम भारत वर्षीय तिर्थरक्षा कमेटी यांच्या तसेच आपल्या सर्वांच्या सहकार्यातून अविरतपणे आजतागयत चालू आहे. या क्षेत्रावर श्रावकांच्या सोईसाठी कुंडल ग्रामपंचायत शेजारी ट्रस्ट कमिटीने सर्व सोईनीयुक्त यात्रेकरु निवासस्थानाचे बांधकाम पूर्ण केले आहे.

या सिद्धातिशय क्षेत्रावर दरवर्षी श्रावण महिन्यातील शेवटच्या सोमवारी जलविहार महोत्सव संपन्न होतो चालू वर्षी दि. 3/9/2018 रोजी वार्षीक जलविहार महोत्सव संपन्न होत आहे या महोत्सवास संपूर्ण भारतातून हजारो स्त्री-पुरुष उपस्थित असतात.

सर्वांच्या सहकार्यातून क्षेत्र जिर्णोद्धाराची कामे करणेत येत असतात. जैन धर्मीयांचा अतिप्राचीन असा वारसा टिकवण्याचे कार्य ट्रस्ट कमिटी सातत्याने करीत आली आहे. या कार्यामध्ये वेळोवेळी आपले सहकार्य लाभलेले आहे. याबद्दल ट्रस्ट कमिटी आपली अत्यंत आभारी आहे. याप्रसंगी आपण व आपले सहकारी तसेच कुटुंबिय क्षेत्र वंदनसाठी अवश्य यावे ही नम्र विनंती.

३०० यात्री रहने के सुविधा और अद्ययावत १० कमरे की सुविधा उपलब्ध है ।
आपकी पुर्व सूचनासे भोजन का प्रबंध किया जा सकता हैं।

Report of the Bharatvarshiya Digambar Jain Tirth Kshetra Committee - Karnataka Unit 2013-2018

The major activities of the Bharat Varshiya Digambar Jain Tirth Kshetra Committee (BDJTC)- Karnataka Unit from 2013 to 2018 are as follows-

1. The Tirthkshetra Committee Karnataka Unit worked under the guidance of Swastishri Charukirti Bhattarak Swamiji of Shravanbelagola, Poojya Bhattaraks of the all the other Mathas of Karnataka and Rajshri Veerendra Heggadeji and under the able leadership of Shri D.R. Shah.

2. **Enrolment of members:**
   The names of the members who have inducted in the last five are as follows-
   - i. Bharatesh Education Trust, Belagavi
   - ii. Shri Shantinath Hothapeth, Hubballi
   - iii. Shri Narashivraj Jeenendra Tikke, Bidar
   - iv. Shri Rahul Belkeri, Bidar
   - v. Shri Abhinandan Jabannavar, Belagavi
   - vi. Shri Ashok Bhupal Mugganavar, Athani
   - vii. Shri Subhas Jabannavar, Belagavi
   - viii. Shri Arun Yalagudri, Athani
   - ix. Shri Raosaheb A Jakanur, Athani
   - x. Shri Pushpak Hanamannavar, Belagavi
   - xi. Shri Vijaykumar Kivade, Gulbarga
   - xii. Shri Ajitkumar Chinde, Bidar
   - xiii. Shri Vijaykumar Jain, Bidar

3. **Renovation and restoration works were taken up for the following temples-**

Basadi at Bankur

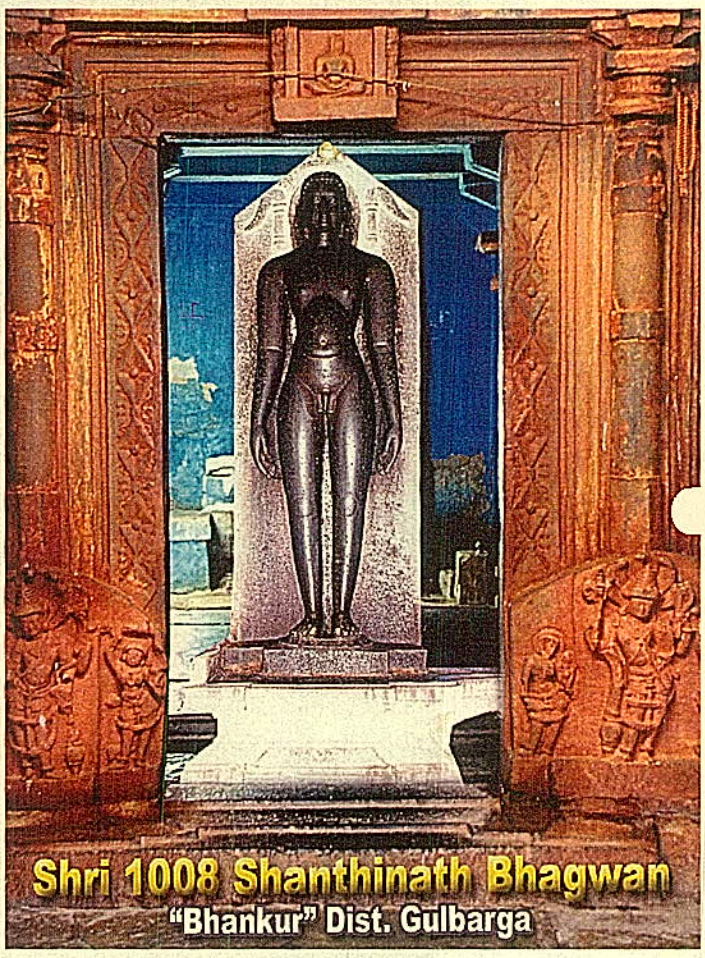

a. **Bankur-** Dist: Gulbarga. The restoration work of the ancient Shri Shantinath Tirthankara temple was completed with the help of Dept. of Archaeology and Museum Govt. of Karnataka under the leadership of Shri D.R. Shahji (President, Tirthkshetra Committee, Karnataka Unit), Shri Prakash Jain and Shri Vijaykumar Jain at a cost of Rs. 58 lakhs.

b. **Halasi- Jain temple at Halasi, Tal: Khanapur, Dist: Belagavi**
The ancient temple of the Kadamba period was restored by the efforts of the Tirthakshetra Committee with the help of Dept. of Archaeology and Museums, Govt. of Karnataka. The Panchkalyan Pratishthapana of the idol of Shri Dharmanath Tirthankar was performed in the auspicious presence of Munishri

Restored temple at Halasi

Parampoojya Chinmayasagarji Maharaj.

c. **Shri Parshwanathswami Tirthankar temple** at Beniwad, Hukekri Tal, Dt: Belagavi. The ancient Shri Parshwanath Swami temple was renovated with the help of Shri Dharmasthala Dharmotthan Trust at a cost of Rs. 20 lakhs under the leadership of Shri Vinod Doddanavar, Secretary, Bharat Varshiya Digambar Jain Tirth Kshetra Committee (BDJTC)- Karnataka Unit and Shri Abhinandan Kocheri and with the active participation of Jain Samaj-Hurkkeri Taluka. The Panchkalyan Pratishthapana was also held with the blessings of Acharya Kulratna Bhushan Maharajji.

d. **Shri Parshwanathswami Tirthankar temple** at Kasmalagi, Tal. Khanapur, Dist.

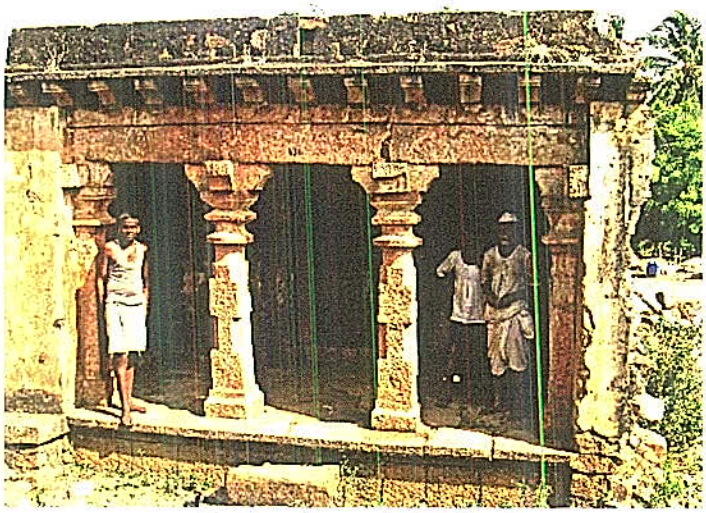

Beniwad temple (Before)

Beniwad Temple (After)

Belagavi, under the guidance of Poojya Jagadguru Swastishri Charukirti Bhattarak Swamiji and the leadership of Raja Shri Veerendra Heggadeji, the idol of Shri Parshwanath Tirthankar which was found while laying the foundation of a school in 2005, was consecrated in 2017 at the newly constructed temple. This was possible due to the efforts of Shri Rajeev Doddanavar, Shri Abhinandan Kocheri (Members, Tirthakshetra Committee), Shri Sanjay Patil (Ex: MLA) and Shri Abhay Patil (MLA-Belagavi).

e. **The Tirthkshetra Committee Karnataka Unit also compiled the database of Jain temples in Karnataka** and the same was forwarded to the Tirthakshetra Committee in Mumbai.

AbbakkadeviBasadi-Hiringadi

Bhagwan Shri ParshwanathDigambarJain Mandir, Makodu

f. **Abbakkadevi Basadi-Hireangadi- dist: Udupi.** BDJTC has released a sum of Rs. 3 lakh for the reconstruction of the temple and the work is in progress.

g. **Shri Parshwanath Digambar Jain Mandir, Makodu, Dist: Mysore :** Similarly BDJTC has released a sum of Rs. 3 lakhs for the reconstruction of the **Bhagwan Shri Parshwanath Digambar Jain mandir, Makodu,** Mysore and the work is in progress.

h. **Parshwanath Jain mandir at Ghodgeri, Dist: Belagavi**: Bharatvarshiya Digambar Jain Tirthakshetra Ccommittee and Dakshin Bharat Jain Sabha have taken up the restoration of the ancient Shri Parshwanath Jain Mandir at Ghodgeri, Tal/ Dist Belagavi and the work is in progress.

4. 2018 marked the organizing of the 86th edition of the Gommateshwar Bhagwan Mahamastakabhisheka Celebrations (GBMMC) at Shravanabelagola from 17th to 25th Feb 2018. Karnataka State unit of the BDJTC actively participated in the celebrations with its members being designated key responsibilities

5. Shri Vinod Doddanavar, Secretary of Karnataka Unit of BDJTC was appointed as one of the five National Secretaries of the GBMMC 2018 and Shri Vinod Bakliwal , Vice President of the National Tirthakshetra Committee was appointed as the Chairman of the Food Sub-Committee for the celebrations. The two members, under the guidance and leadership of Poojya Jagadguru Swastishri Charukirti Bhattarak Pattacharya Swamiji, Smt. Sarita M.K. Jain, National President of the GBMMC 2018 committee and other members of the Karnataka State unit of the Tirthakshetra Committee, successfully worked for the conduct of the Mahamastakabhishek Celebrations.

6. Shri Vinod Doddanavar successfully coordinated the organizing of the eight National Level Conferences in the run-up to the main event. These conferences included
   a. The National Level Sanskrit Sammelan
   b. National Level Prakrit Sammelan
   c. National Level Jain Mahila Sammelan
   d. National Level Jain Yuva Sammelan
   e. National Level Jain Patrakar Sammelan
   f. National Level Vidwat Sammelan
   g. National Level Kannada Sammelan
   h. Sarvadharma Sammelan

   He also coordinated the visits of the Hon. President of India, Hon. Vice President of India, Hon. Prime Minister of India and the Hon. Home Minister of India. He was also incharge of the printing and distribution of the Darshan Passes for the devotees to witness the consecration ceremony.

7. Shri Vinod Bakliwal, as the Chairman of the Food Committee, managed 17 kitchens that provided free food to devotees thrice a day for the entire duration of the celebrations. Lakhs of devotees coming from across the world could partake of the food through these kitchens.

8. Similarly, Shri Pushpak Hanmannavar, member,

BDJTC-Karnataka Unit from Belagavi individually managed the Bhojanshala at Yatri Nagar where more than 20,000 devotees could partake of food every day. Shri Pushpak Hanmannavar also coordinated to successfully garner 2500 tins of edible oil for the food preparations at Shravanabelagola worth more than 36 Lakh rupees.

9. Shri Abhinandan Kocheri, Member, BDJTC from Belagavi assisted in the pass distribution work at Shravanabelagola while Dr. Bharat Alasandi and Shri Ashok Muggannavar, Member, BDJTC, Karnataka Unit, along with a team of volunteers from Bharatesh Education Trust, Gomatesh Vidyapith- Belagavi and others from across Belagavi district handled the responsibility of managing Kalash Nagar III at Shravanabelagola

Future Plans:

The Karnataka Unit of the committee is committed to restore more Jain temples in Hannikeri, Arisinabedu and other places in the coming years.

It is blessed with the guidance of Poojya Jagadguru Swastishri Charukirti Bhattarak Pattacharya Swamiji and leadership of Smt. Sarita M.K. Jain, President of the

संतोष ही सज्जनता की पहिचान है

- आ.विशुध्दसागरजी महाराज

खंडेलवाल दिगंबर जैन पंचायत पार्श्वनाथ मंदिर राजाबजार, औरंगाबाद मे प.पू.आचार्य विशुध्दसागरजी महाराज का चातुर्मास चल रहा है इस चातुर्मास की श्रृंखला मे आयोजित प्रवचनमाला में आचार्य विशुध्दसागरजी महाराज ने कहा कि, हे जीव ! तेरी अंतरंग की प्रवृत्ति जैसी होगी, भावों की स्थिती जैसी होगी वैसी बाह्य मे प्रवृत्ति होगी. अंतरंग भावों की परिचायक है बाह्य की प्रवृत्ति. भाषा अंतरंग भावों की परिचायक है. यदि भाषा में क्रोध झलक रहा है. तो उस जीव का अंतरंग कितना कलुषित होगा यह जाना जा सकता है.

ज्ञानियों ! मर्यादा सीखना है तो श्रीराम से सीखना, राजा जनक ने कह दिया कि आपको चौदह वर्ष को वनवास दिया जाता है, परंन्तु कुछ नहीं जो पिता की आज्ञा. धन्य हो श्रीराम को उन्होंने जो आदर्श जीवन जिया है वह प्रत्येक मनुष्य को विचारणीय है. विश्व पटल पर कोई आदर्श स्थापित हुआ है तो वह मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जीवन चरित्र है. जो पुरुषों मे उत्तम है वही पुरुषोत्त है, जिन्होंने विषयों को छोड़कर जिन पुरुषत्व को प्राप्त किया है वही पुरुषोत्तम है.

हे जीव ! महापुरुषों के चित्रों को नहीं निहारना उनके चारित्र को निहारना. साधुओं की संगत से भले ही तुम साधु न बन सको, परन्तु हे जीव संतोषी अवश्य बन जाना. संतोष ही सज्जनता की पहिचान है.

श्रीराम वन में गये तो बन गये. जिन-जिन को बनना है वह सब वन चलो और संयम की साधना करो, श्रीराम पहले मात्र अयोध्या के राजा थे, परन्तु जब वे वन गए तो वह विश्व के राजा बन गये. भाई हो तो भरत जैसा हो जिसने चौदह वर्ष तक राज्य प्राप्त करके भी श्रीराम को नहीं भूला. ज्ञानियों ! श्रीराम विश्व के लिए आदर्श पुरुष थे, उनका आचरण अनुकरणीय है.

दुसरों के व्दारा की प्रशंसा प्राप्त करके प्रसन्न मत हो जाना आप स्वयं में निहारना कि मैं प्रशंसनीय हूं या नहीं ? जब तुम्हारा मन तुम्हें प्रशंसनीय मान ले तो बहुत प्रसन्न होना.चातुर्मास मे प्रवचन माला सफल करने हेतु पंचायत अध्यक्ष एवं चातुर्मास समिती के अध्यक्ष ललीत पाटणी, उपाध्यक्ष विनोद लोहाडे, सचिव अशोक अजमेरा, कोषाध्यक्ष एम.आर.बडजाते एवं विश्वस्थ कार्यकारणी मंडळ समिती परिश्रम कर रही है ऐसी जानकारी चातुर्मास समिती के प्रचार प्रसार संयोजक नरेंद्र अजमेरा व पियुष कासलीवाल ने दी.

- नरेंद्र अजमेरा / पियुष कासलीवाल

Philanthropists found a secure future for Jainism and Jain community in Tamilnadu - By giving a small push to the younger generation

Dr.N.K.Ajithadoss Jain and Er.P.Rajendra Prasad Jain

Tamilnadu found a reliable solution to address the concern for the future of the Jaina community, religion and culture; the manthra is "Groom the the present younger generation as they are the future guardians of the Jaina community, religion and culture"; For the past ten years the young, intelligent, religious minded, culturally sound Tamil Jain students are supported for their education and motivated to do well in Education to get elevated economically and culturally.

Shri Parsvanath Digamber Jain Bhavan Management Trust, Tindivanam formed a committee with the blessings of **Munishri 108 Vishvesh Sagar Maharaj**, for giving awards and scholarships annually to Tamil Jain students, in the year 2009, in the name of **His Holiness Ganacharya Shri 108 Virag Sagarji Maharaj;** the award is simply called as **Virag Award**; it is awarded to students who do exceptionally well in the Board Examinations of 10th - Secondary and 12th - Senior Secondary . It is directed towards acknowledging exceptional students for their achievements for the past Ten years;

A great Philanthropist, **Srimathi.Sarita M.K.Jain,** through **Sarita Jain Foundation** provides scholarships annually for many students studying senior Secondary and Colleges to pursue their higher education; the help is timely and highly supportive for the young, bright, economically needy Tamil Digamber Jain students; The Tamil Jain community will ever remember this yeoman service rendered by Srimathi.Sarita M.K.Jain and Sri.M.K.Jain; such push given at the right moment in the form of scholarship helps the students to a greater extent to secure a future.

This year function was conducted at Tindivanam **"Thillai Thirunavu Marriage Hall"** on **15th July 2018, Sunday,** with the Blessings and presence of **Munishri 108 Arijit Sagar Maharaj and Munishri 108 Sowmya Sagar Maharaj,** belongs to **Acharyashri 108 Vishudha Sagarji Maharaj Sangh**, who was initiated as Muni by **Ganacharyashri 108 Virag Sagarji Maharaj** and **Swasthishri Lakshmisen Bhattarak Swamigal of Mel Sittamur**, many Educationists, Achievers and community leaders participated and given motivational talk to encourage the students.

There were about **89 students of 10th standard** participated. In which about 42 scored more than 90% and 7 scored Centum. The State Board toppers were 1. Namichandran.M – 496/500, 2. Kaaviya.D – 490/500, 3. Ramyaa.A.G. - 490/500, 4. Nithesh.R – 486/500 and The CBSE toppers were 1. Aditya.C – 492/500, Kalaiselvi.M.R – 477/500, 3. Ayush.P Jain - 467/500

There were about **104 students of 12th standard** participated. In which about 22 scored more than 90% and 6 scored Centum. The State board toppers were 1. Sushma.C – 1157/1200, 2. Sasirekha.C – 1153/1200, 3. Nithya.M – 1148/1200, 4. Aparna.S – 1148/1200 and the CBSE toppers were 1. Hemanth.B – 477/500, 2. Anandalakshmi.R – 468/500, 3. Chandraprabhu. A – 465/500

Sarita Jain Foundation Scholarships Cheques were distributed to about 300 students of Senior Secondary and college level to the tune of around Rs.13 lakhs, at the venue. The foundation also distributed scholarships through other Trusts and associations to the tune of around Rs.90 lakhs for this Academic year.

The programme was successfully organised by Shri Parsvanath Digamber Jain Bhavan Management Trust,

Tindivanam with the help of volunteers in particular the Teachers in the community, under the able guidance and Mentorship of Sri.K.C.Chinnappa Jain and Sri.S.Srenika Rajan Jain.

The Students participated were enthralled and will remember the event for their life time. They were given Oath by the Munishri and group photos taken.

The same team also involved in organising the Students, who score more than 90% in the Board Examinations of 10th & 12th, with their Parents as a group, to participate in the **All India Students Encouragement Scheme** conducted with the Blessings of **Acharyasri 108 Gyan Sagarji Maharaj**, at his Chathurmas location, for the past 8 years and will be continued for this year also. It's an unique arrangements, well appreciated by Acharyasri and other organisers, Students belonging to other states come on their own to participate the program.

Shri Parsvanath Digamber Jain Bhavan Management Trust, took this opportunity to launch their website as www.spdjaintrust.org to show cause the Trust activities and planning for online application process for all the above education matters from the next academic year.

No guide for visitors pushes prominent Jain site into oblivion

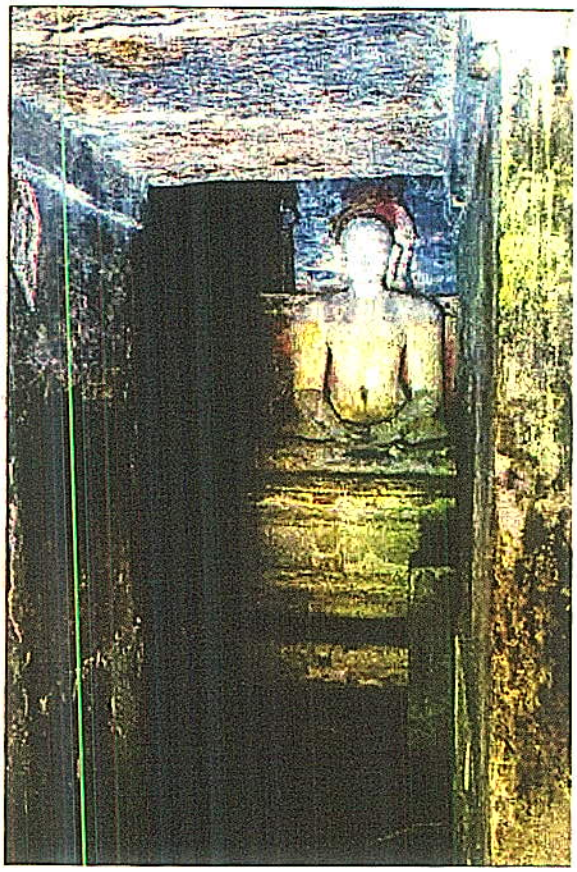

Inscriptions on stone praising Raja Raja Cho- la's donations and welfare schemes welcomes visitors as they enter the Jain temple and cave complex at Tiru- malai, a remote village in Polur in Tiruvannamalai district. But this is all the information that visitors can get on the once prominent Jain centre in the hill complex, which houses a 16.5ft-tall rock sculpture of Neminatha (the 22nd Tirthankara), the tallest Jain sculpture in Tamil Nadu.

Despite its rich history there are no attempts to make visitors aware of the significance of the sculptures and frescoes at the site .Maintained by the Archaeological Survey of India)ASI(, the complex has three Jain caves and two temples .Though puja is performed daily at the Ma -havira temple daily ,an old watchman is the only person guarding the site ,which has undergone renovations a number of times since the9 th century.

When K Ananthakrishnan first visited the temple complex a couple of years ago ,he was clueless about its historical significance" .There was no one to help me .I couldn't find any brochure with basic details about the place .I returned and began my studies .I then visited the place last month with more information ",said Ananthakrishnan ,a Chennai -based research scholar.

The Kundavai Jain temple is said to have been commissioned by Kundavai ,the eldest sister of Raja Raja Chola and has frescoes of Yakshi ,Parshvanatha and Gomateshwara .But as there is no information about the paintings, visitors are left to do their own research .The paintings had left S Muthuraman ,a teacher ,confused when he visited the site a year ago .He wanted to know whether the paintings belonged to the9 th century" I was a bit confused when I saw the ruined paintings inside the rock-cut cave temple .The paintings on the ceilings and walls were of different patterns .So I checked with some history experts .But they were not aware of it .I later found that it was created after15 th century .I think it has to be studied in detail ",he said.

Another temple for Parshvanatha on top of the hill with three sets of feet carved into the rock near it piques curiosity" .I thought these were footprints of Tirthankaras but I was wrong. A scholar later told me they were the footprints of three Jain gurus Veshabhacharya ,Samatbhadracharya and Var -dutt Gandhar .If the ASI kept an information board it would have helped us ",said Muthuraman.

Jain scholar K Ajithadoss said more people should know about the cultural significance associated with this Jain site, as it was one of the main centres of Jainism in TN" .The visitors are not informed about the various aspects related to the temple complex .Distribution of a brochure with basic details of the site will definitely help ", he said.

प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जी जैन, फिरोजाबाद का देवलोकगमन

यह सूचित करते हुए अपार दु:ख हो रहा है कि जैन जगत् के जाने-माने मूर्धन्य विद्वान प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाशजी का 85 वर्ष आयु में दिनांक 8 अगस्त 2018 को दु:खद निधन हो गया।

लेखनी के महारथी, वाणी के जादूगर, अपनत्व के अपने, सिद्धांतों के अडिग, जिनागम के मर्मज्ञ तलस्पर्शी अध्येता युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत परम आदरणीय प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाशजी ने अपने जीवन के लगभग सात दशकों तक शिक्षा, सेवा, लेखन, व्याख्यान, सम्पादन से लगाकर अनेक क्षेत्रों में विद्वत् शिरोमणी के रूप में अपना विशिष्ठ स्थान बनाया था। उनके विचार, चिंतन और उनके कार्य व्यवहार में उन्हें अमर बना दिया है।

भारतीय जैन संस्कृति के सृजन में श्रद्धेय नरेन्द्रप्रकाशजी का अविस्मरणिय योगदान रहा है। वह एक परिपक्व विद्वान् तो थे ही वे अध्यात्म जगत के एक देदिप्यमान प्रकाश स्तम्भ थे उनके देहावसान से जैन जगत की अपूर्णनीय क्षति हुई है।

भारतवर्षीय जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार दिवंगत आत्मा की चिरशांति एवं आप सभी परिवार जनों को यह अपार दु:ख सहन करने की शक्ति मिले ऐसी जिनेन्द्रप्रभु से प्रार्थना करती है।

विचारों के धरातल पर सदैव अमर रहेगें 'प्राचार्यजी'

– राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद

जीवन का क्या है वह बहुत बड़ा भी हो सकता है, बहुत छोटा भी, जिंदा रहते है तो केवल विचार। विचार, चिंतन, लेखन, कार्य व्यवहार अमर बनाते है। प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाशजी जैन जैसा बनने में वर्षो की साधना लगती है, वह साधना व्यवहारिक जीवन में कर अपने आपको किसी शब्द का पर्यायवाची बना लेना प्राचार्यजी के व्यक्तित्व में था। यू तो अनेकों प्राचार्य है, होगें, हो गये, लेकिन कोई किसी के सामने प्राचार्यजी कह दे तो 'नरेन्द्रप्रकाशजी' की छवि ही सामने आती है, इस ईमानदारी से जिया उन्हौंने अपना पूरा जीवन। धन्य है, लेखनी के महारथी, वाणी के जादूगर, अपनत्व के अपने सिद्धान्तों के अडिग, जिनागम के ममर्ज्ञ, तलस्पर्शी, अध्येता, युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत परम आदरणीय प्राचार्य श्री नरेन्द्रप्रकाशजी ने फिरोजाबाद स्थित निवास पर 8 अगस्त 2018 को अंतिम सांस ली। 1 जनवरी 1933 को जन्में आपने जीवन के लगभग सात दशकों तक शिक्षा, सेवा, लेखन, व्याख्यान, सम्पादन में लगाकर अनेक जनों को दिशा दी। वहीं जैन जगत के विद्वत शिरोमणी के रूप में अपना स्थान बनाया जो ता उम्र उनके पास सुरक्षित रहा।

मुझे जैसे ही उनके निधन का समाचार मिला मैंने अपनी काल हिस्ट्री चेक की तो पाया विगत 24 जुलाई की रात को ही उनसे बहुत देर तक बात हुई थी और आज वे हमारे बीच नहीं रहे। मैं अपने जीवन में अनेक विद्वानों से मिला हूँ कुछ को छोड़ दे तो वे अक्सर जो पूछते है वो ठीक नहीं लगता, वे किसी का आकलन उसकी योग्यता से नहीं उसकी अन्य प्रकार की निष्ठाओं से करते है। लेकिन प्राचार्यजी का गुण सबसे अलग था मेरा उनसे आमना–सामना एक या दो बार हुआ, लेकिन कोई परिचय नहीं हुआ। मेरे लेख पढ़कर वे मुझे फोन करते व मेरा उत्साह बढ़ाते थे। उन्हौंने मुझे एक पुस्तक भेजी थी जो बहुत छोटी–सी थी, मैं एक ही बैठक में उसे पढ़ गया और मैंने उस पर अपनी प्रशंसा लिखी 'वामन कृति में विराट व्यक्तित्व' जो अनेक अखबारों में छपी। प्राचार्यजी का एक दिन फोन आया बोले ""राजेन्द्र, मैं तुम्हारी लेखनी को प्रमाण करता हूँ।" अच्छा लिखते हो लिखते रहो मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। मैंने महसूस किया व तय किया कि जीवन में इससे बड़ा पुरस्कार नहीं हो सकता जो मुझे मिला है। एक–दूसरे से प्रत्यक्ष परिचय नहीं लेकिन 8–10 दिन में उनका फोन आ जाता था, आत्मीयता की बात होती थी। बहुत बार प्रत्यक्ष मुलाकात की इच्छा रही लेकिन नहीं मिल सके लेकिन जब भी बात की तो ऐसा लगा नहीं। खैर उनका योगदान जितना है उतनी हमारी उम्र भी नहीं है वे जैन गजट के वर्षो तक सम्पादक रहे, उनके सम्पादकीय संग्रहणीय रहे, उनके लेख व लिखे आलेख एक दस्तावेज है जो अनेक वर्षो तक समाज का दिग्दर्शन करते रहेगें।

अनेक विषयों पर उन्हौंने लिखा जो लिखा, जो बोला सार्थक किया। पहले 'लखा' फिर 'लिखा'। उन्हौंने कभी किसी की लाईन छोटी करने का प्रयास नहीं किया। सफलता के दस सूत्र लिखते हुए उन्हौंने लिखा "धर्म, नैतिकता, जीवन–मूल्य और सृजनात्मक प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करें, नकारात्मक सोच पर तुरंत 'ब्रेक' लगाने की कोशिश करें। बुराई देखने से 'बुराई' और भलाई देखने से 'भलाई' बढ़ती है।" संस्थाओं के सन्दर्भ में उनका कथन "समाज किसी भी संस्था के कार्यो में पारदर्शिता देखना चाहती है इससे साख बनती है, साख है तो सब कुछ है, साख नही तो सब राख है" ऐसे उनके सूत्र उन्हौंने दिये थे।

अंतिम समय में सराकोद्वारक आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज ने आगरा में उन्हें सम्बोधन किया और णमोकार मंत्र सुनाकर जीवन की क्षण भंगुरता को महसूस कराया। एक जिनवाणी के लाल को अन्त समय में आचार्यश्री का सम्बोधन मिला ऐसे ज्येष्ठ व श्रेष्ठ व्यक्तित्व के धनी प्राचार्यजी निश्चित रूप से विचारों के धरातल पर अमर रहेगें। उनकी पुस्तक 'मेरी अमेरिका यात्रा' में उन्हौंने लिखा है –

"जो समय चिंता में गया, वह कूड़ेदान में गया। जो समय चिन्तन में गया समझो कि वह तिजोरी में गया" वे तस्वीर के धनात्मक पहलू में लिखते है – "सुख का सपना हो या दुख की बदली। मेरी दुनिया गैरों से सौ बार भली" उनका चिंतन–मनन–अपनत्व–प्रेम–स्नेह जो एक विद्वान में होना चाहिये उनमें सब कुछ था। वे आज हमारे बीच नहीं है लेकिन उनके विचार हमारे मानस पटल पर हमेशा बने रहेगें हमारा मार्गदर्शन करेगें। हम सबने उनके जीवन से बहुत पाया है उन्हीं की तरह हम सब अपनी–अपनी जिम्मेदारी को पूर्ण करते हुए जीवन जीयें। स्व. द्वारिकाप्रसाद मिश्र की पंक्तियॉ जिन्हें लिखकर प्राचार्यजी ने विराम लिया था, मैं भी अन्त में उन्हीं पंक्तियों से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ –

"जिसने जितना जो कुछ ऑका है मुझको मेरा मोल नहीं, वो मोल तुम्हारा है।"

श्रद्धांजलि सहित –

फूल तो नहीं रहा मगर सौरभ कायम है।
नाविक तो नहीं रहा मगर किनारा कायम है।
न भूलेगें 'प्राचार्यजी' अनंत उपकारों को हम,
'नरेन्द्र' तो नहीं रहा, मगर 'प्रकाश' अभी भी कायम है।

दैनिक विश्व परिवार के संपादक
प्रदीप कुमार जैन प्रेस काउंसिल ऑफ इण्डिया के सदस्य नामित

रायपुर। देश की प्रेस जगत से जुड़े मामलों हेतु गठित सर्वोच्च संस्था प्रेस काउंसिल ऑफ इण्डिया में भारत सरकार द्वारा दैनिक विश्व परिवार. झांसी/रायपुर के सम्पादक श्री प्रदीप जैन को आगामी 3 वर्षों हेतु सदस्य नामित किया गया है। जैन समाज से प्रेस काउंसिल ऑफ इण्डिया में प्रथम बार किसी को नामित किया गया है।

सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति चन्द्रमौली कुमार प्रसाद की अध्यक्षता वाली इस प्रेस काउंसिल में भारत सरकार द्वारा लोकसभा एवं राज्यसभा के सदस्यों के साथ ही दैनिक विश्व परिवार के सम्पादक प्रदीप कुमार जैन को सदस्य नामित करने की अधिसूचना भारत सरकार द्वारा जारी की गई है।

उल्लेखनीय है कि श्री जैन, जर्मनी में पत्रकारिता का अध्ययन कर विगत 34 वर्षों से रचनात्मक पत्रकारिता में योगदान कर रहे हैं।

सम्पादक:- दैनिक विश्वमित्र परिवार, झांसी

रायपुर में 2-3 सितंबर को
दिगंबर जैन युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन

रायपुर। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में दिगम्बर जैन समाज द्वारा अपने समाज के युवक-युवतियों के विवाह में आ रही कठिनाईयों और संबंधों की उपलब्धता के निराकरण के लिये अखिल भारतीय युवक-युवती परिचय सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। यह सम्मेलन 2 सितंबर रविवार एवं 3 सितंबर सोमवार को अग्रसेन धाम लाभांडी में आयोजित है। इसमें सम्पूर्ण देश से विवाह योग्य युवक-युवतियों तथा उनके अभिभावकों को आमंत्रित किया गया है।

समिति के अध्यक्ष प्रकाश मोदी (पारस चैनल) ने आयोजन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इससे आधुनिक एवं विकसित छत्तीसगढ़ की अवधारणा से पूरे देश की जैन समाज को परिचित कराने का मौका मिलेगा। आयोजन पूर्णत: आधुनिक तकनीकी का उपयोग करते हुए किया जाएगा जो आकर्षण का केन्द्र होगा। 2 सितंबर को देश के जाने-माने कलाकारों द्वारा प्रस्तुतियां भी दी जाएंगी।

आयोजक संस्था के महामंत्री प्रदीप कुमार जैन (विश्व परिवार) ने कहा कि दिगंबर जैन समाज का यह अखिल भारतीय स्तर का आयोजन है। प्रविष्टि शुल्क, मात्र 800/- है। प्रत्याशियों एवं अभिभावकों के निवास एवं भोजन की व्यवस्था की गई है। परिचय पुस्तिका सभी को प्रदान की जाएगी।

इस सम्मेलन में रजिस्ट्रेशन के लिये फॉर्म जैन मंदिरों में उपलब्ध करा दिये गए हैं। इसके अलावा ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन www.digamberjainparichaysammelan.com वेबसाईट पर जाकर भी किया जा सकता है। संपर्क हेतु मेल आईडी cgparichaysammelan @gmail.com है। पंजीयन हेतु हेल्प डेस्क मो. नं. 96856-24130 पर भी संपर्क किया जा सकता है।

श्री 1008 सहस्त्रफणी पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट, विजयपुर

ट्रस्टकी कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के दो समूह द्वारा न्यायालयीन वादविवाद के परिप्रेक्ष्य में कर्नाटक उच्च न्यायालय कलबुर्गी पीठ के आदेशानुसार ट्रस्ट के अनुवांशिक (हेरिडिटरी) 7 ट्रस्टी ही ट्रस्ट का प्रबंधन निचले न्यायालयों में दाखिल किये गये प्रकरणों के निर्णय-आदेश मिलने तक करते रहेंगे। ऐसा अंतिम आदेश उच्च न्यायालय ने दिनांक 17/04/2018 को दिया है। प्रस्तुत संदर्भ में निचले न्यायालय में चल रहे प्रकरणों का दिसंबर 2019 तक निर्णय लेने का आदेश भी दिया है।

प्रस्तुत उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक 17/4/2018 के विरोध में श्री बाहुबलि रायप्पा यलगुद्री एवं श्री महावीर पारिसप्पा तंगा इन दोनों ने भारत के सर्वोच्च न्यायालय में एस.एल.पी.(सी) क्र.13225-13226/20/8 द्वारा आहवान कर याचिका दायर की। प्रस्तुत याचिका के संदर्भ में सर्वोच्च न्यायालय ने दि. 05/07/2018 को कर्नाटक उच्च न्यायालय के आदेश को ही सही मानते हुए याचिका खारिज कर दी है।

हमारे नये बने सदस्य

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

आजीवन सदस्य

श्री मनोजकुमार कोमलचंद जैन,
सागर

श्री वसंत केशरीचंद बोडनेरकर
नागपुर

श्री स्वानुभव अकलंक जैन
जयपुर

श्री अजित नवीनचंद बडजात्या
सोलापुर

श्री सचीन पवन जैन
कात्रज-पुणे

श्री मनोजकुमार केशरचंदजी लोव्हाडे
औरंगाबाद

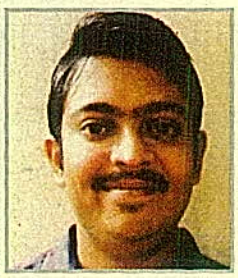
श्री मनीष महावीरलाल जैन
मुम्बई

श्री जयेश रमनलाल शाह
राजकोट

श्री ए. जीवेनदीरदसन अदीप्पान
तिरुवनमलैय

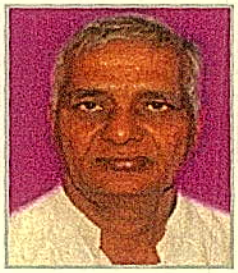
श्री गौतमचंद कस्तुरचंद काला
बीड

श्री चेतनकुमार अजितकुमार ठोले
औरंगाबाद

श्री संजय हिरालालजी काला
औरंगाबाद

श्री प्रसाद नेमीचंदजी पाटणी
औरंगाबाद

श्री सागर राजेन्द्रकुमार पाटणी
औरंगाबाद

श्री सुधीर पदमप्रभा गांधी
अमरावती

श्री प्रवीण कमलाकर भिसीकर
अमरावती

श्री संजय केशवराव संगई
अंजनगांव सुरजी, अमरावती

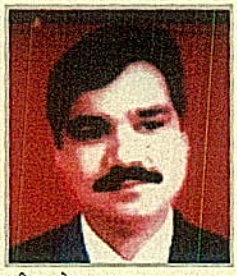
श्री अमोल अरुणराव महाजन
अंजनगांव सुरजी, अमरावती

श्री उदय कमलकर नांदगांवकर
कारंजा लाड, वाशिम

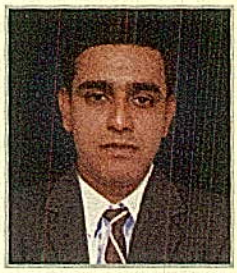
श्री अलोक राजकुमार चवरे
कारंजा लाड, वाशिम

श्री हेमंतकुमार जयकुमार चवरे
कारंजा लाड, वाशिम

श्री उदय मधुकर जोहरापुरकर
ईतवारी, नागपुर

श्री अविनाश रतनलाल अग्रेकर
अमरावती

श्री विनम्र श्रेयांस चवरे
कारंजा लाड, वाशिम

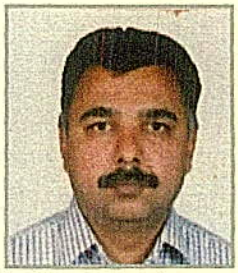
श्री समीर धन्यकुमार जोहरापुरकर
कारंजा लाड, वाशिम

श्री राजेन्द्र धन्यकुमार खंदारे (जैन)
कारंजा लाड, वाशिम

श्री राजेन्द्र झुंबरलाल काला
औरंगाबाद

श्री जिनेन्द्र जयकुमार दोशी
बोंदाले (सोलापुर)

श्री प्रेमकुमार राजकुमार काले
श्रीरामपुर (अहमदनगर)

सौ. शितल प्रेमकुमार काले
श्रीरामपुर (अहमदनगर)

श्री अलकेश पोपटलाल पाटणी
श्रीरामपुर (अहमदनगर)

श्री जे. पोण्णियम सेलवन पाटणी
नंगानल्लूर, चेन्नई

श्री मानीकलाल मोतीलाल वोरा
अकलूज (सोलापुर)

श्री मयुर राजकुमार गांधी
अकलूज (सोलापुर)

श्री संदेश रवीन्द्र गांधी
अकलूज (सोलापुर)

डॉ. श्रेयांसकुमार जोरवल जैन
बागपत

श्री विनय वामनराव जुनानकर
नागपुर

श्री कुनाल प्रदीपकुमार ठोले
औरंगाबाद

कुमारी अनुराधा मनोजकुमार साहुजी (जैन)
औरंगाबाद

कुमारी खुशबू मनोजकुमार साहुजी (जैन)
औरंगाबाद

श्री वज्राचंद विजयकुमार साहुजी
औरंगाबाद

श्री चारुकीर्ति भालचंद्र शिरसोडे
सोलापुर

श्री कमलेश अशोक शाह
अकलुज, सोलापुर

श्री सुनीलकुमार हिराचंद दोशी
अकलुज, सोलापुर

श्री प्रशांत जम्बुकुमार दोशी
सदाशिवनगार, सोलापुर

श्री वृशभेन्द्र शांतीनाथ कासार (जैन)
सोलापुर

श्री राजेन्द्र सुरजसा साहुजी
औरंगाबाद

श्री राकेशकुमार भागचंदजी सेठी
हावड़ा (वेस्ट.बंगाल)

श्री प्रशांत वर्धमान एखंडे
सोलापुर

श्री अभीजित राजकुमार डोखांडा
माळशीरस, सोलापुर